mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-92 | पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
05 अप्रैल 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

अयोध्या पहुंचकर ...
@ पेज 7

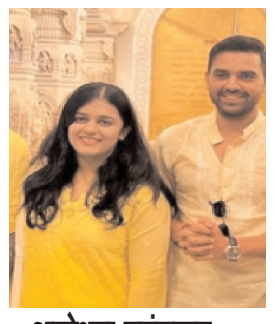

संक्षिप्त समाचार

बैंकॉक में भगवान बुद्ध मंदिर में पीएम मोदी ने की पूजा

बैंकाक (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को बैंकाक के वात फो मंदिर गए, जो अपनी वास्तुकला और लेटे हुए बुद्ध की 46 मीटर लंबी विशाल प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। थाईलैंड की प्रधानमंत्री पैतोंगतार्न शिनावात्रा भी उनके साथ थीं। प्रधानमंत्री मोदी ने लेटे हुए भगवान बुद्ध की पूजा अर्चना की और मंदिर में वरिष्ठ बौद्ध भिक्षुओं को 'संघदान' दिया। प्रधानमंत्री ने लेटे हुए बुद्ध के मंदिर को अशोक के सिंह स्तंभ की प्रतिकृति भी भेंट की तथा भारत और थाईलैंड के बीच मजबूत और जीवंत, सभ्यतागत संबंधों को याद किया। इसके साथ ही उन्होंने नेपाल के प्रधानंत्री केपी शर्मा ओली से भी मुलाकात की।विदेश मंत्रालय ने यात्रा की तस्वीरों

के साथ 'एक्स' पर जारी एक पोस्ट में कहा, ''सदियों पुराना एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध! प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री पैतोंगतार्न शिनावात्रा के साथ वात फ्रा चेतुफोन विमोनमंगकलाराम रत्चवोरमाहविहान-वात फो में लेटे हुए बुद्ध के ऐतिहासिक मंदिर का दौरा किया और दिव्य आशीर्वाद मांगा।'' वात फ्रा चेतुफोन विमोनमंगकलाराम रत्चवोरमाहविहान को वात फो के नाम से जाना जाता है। यहां थाईलैंड में बुद्ध की छवियों का सबसे बड़ा संग्रह है और यह देश का सबसे पुराना सार्वजनिक शिक्षण केंद्र है।

वर्ल्ड ऑर्डर बदलते ही भारत से दोस्ती को बेताब हुआ चीन

बीजिंग (एजेंसी)। दुनिया में वर्ल्ड ऑर्डर चेंज होते ही चीन का झुकाव भारत की ओर बढ़ता ही जा रहा है। जबकि अभी तक जून 2020 में गलवान घाटी हिंसा के बाद से बीजिंग भारत के प्रति कड़ा रुख अपनाए हुए था। मगर अमेरिका में राष्ट्रपति ट्रंप की वापसी, अमेरिकी-रूस में बढ़ती नजदीकी, पीएम मोदी के ट्रंप और पुतिन से मजबूत रिश्ते जैसे तमाम कारकों ने वर्ल्ड ऑर्डर को बदल कर रख दिया है। ऐसे में अब चीन को भारत के साथ संबंध बना कर रखने में ही भलाई दिख रही है। इसलिए चीन अब भारत से दोस्ती को बेताब हो रहा है। ऐसे में सीपीसी ने बीजिंग को भारत से संबंध सुधारने के लिए कहा है। इसके

अलावा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) ने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) को भी इस बाबत संदेश भेजा है। इसमें सीपीसी ने कहा है कि भारत-चीन संबंधों में सुधार दोनों देशों और क्षेत्र के हित में है। सीपीसी ने इसी के साथ मदुरै में आयोजित माकपा के सम्मेलन के लिए शुभकामनाएं दी हैं। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) द्वारा साझा किए गए एक दस्तावेज के अनुसार, दुनिया भर की 34 वामपंथी पार्टियों ने उसे 24वीं पार्टी कांग्रेस (सम्मेलन) की सफलता के लिए शुभकामना संदेश भेजे हैं। सीपीसी के अलावा, कोरिया की वर्कर्स पार्टी, वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी, क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी, ऑस्ट्रेलिया की कम्युनिस्ट पार्टी, बेल्जियम की वर्कर्स पार्टी, फलस्तीनी पीपुल्स पार्टी और अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी माकपा को शुभकामना संदेश भेजे हैं। चीन की सीपीसी ने अपने संदेश में कहा कि वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में, चीन-भारत संबंधों में सुधार दोनों देशों और क्षेत्र के साझा हित में है।

वक्फ बिल का विरोध, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने राष्ट्रपति मुर्मू से तत्काल मिलने का वक्त मांगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल को संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा से पास कर दिया गया है। हालांकि, विपक्षी दल और ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड समेत कई मुस्लिम संगठन इस बिल का लगातार विरोध कर रहे हैं। शुक्रवार को देश के कई बड़े शहरों में वक्फ बिल के विरोध

में प्रदर्शन हुए हैं। वहीं, अब ढ्रुस्ब्बक्क ने वक्फ संशोधन बिल को लेकर भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से तत्काल मुलाकात का समय मांगा है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने संसद द्वारा पारित वक्फ संशोधन बिल पर अपनी चिंता जताने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से तत्काल मुलाकात का समय मांगा है, इससे पहले कि राष्ट्रपति इस बिल को मंजूरी दें। ढ्रुस्ब्बक्क के प्रवक्ता डॉ. एस क्यू आर इलियास ने बोर्ड के महासचिव मौलाना फजलुर रहीम मुजद्दी की ओर से लिखे गए पत्र के विषय को शेयर करते हुए लिखा- ÷अधिनियम द्वारा पेश किए गए संशोधन में महत्वपूर्ण परिवर्तन शामिल हैं जो वक्फ संस्थान के प्रशासन और स्वायत्तता को प्रभावित करते हैं, जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से धार्मिक और धर्मार्थ गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।÷ पत्र में आगे कहा गया है कि राष्ट्रपति से मिलने का हमारा मकसद हाल ही में पारित वक्फ (संशोधन) विधेयक 2025 और देश भर के मुस्लिम समुदाय के लिए इसके निहितार्थ के बारे में अपनी गहरी चिंता व्यक्त करना है। बोर्ड ने आगे कहा- ÷यह अधिनियम पूरी तरह से असंवैधानिक है और देश के मुसलमानों पर हमला है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने जारी किया अलर्ट

अगले 6 दिनों में दिल्ली समेत कई राज्यों में चलेगी 'लू'

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत मौसम विज्ञान विभाग यानी ढ्रस्ध्र ने भारत के विभिन्न राज्यों में लू चलने और तापमान में भारी बढ़ोतरी की संभावना का अपडेट जारी किया है। ढ्रस्ध्र ने शुक्रवार को बताया है कि आने वाले दिनों में केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की संभावना है। ढ्रस्ध्र ने कहा है कि दिल्ली में 6 या 7 अप्रैल की तारीख तक कुछ स्थानों पर दिन का तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच सकता है।

इन राज्यों में चलेगी लू: भारत मौसम विज्ञान विभाग ने बताया है कि आने वाले 6 दिनों उत्तर-पश्चिम भारत में लू चलने का अनुमान है। लू से प्रभावित क्षेत्रों में दक्षिणी हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी मध्यप्रदेश शामिल है। इसके साथ ही मध्य और उत्तर-पश्चिम भारत के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान में दो से चार डिग्री सेल्सियस तक की

बढ़ोतरी होने का अनुमान है। मौसम विभाग ने हाल ही में जानकारी दी थी कि भारत में अप्रैल से लेकर जून महीने तक सामान्य से ज्यादा तापमान रहने की संभावना है। इसके साथ ही मध्य व पूर्वी भारत और उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों में लू चलने की संभावना है। बता दें कि भारत में आमतौर पर अप्रैल से जून के बीच चार से सात दिन लू चलती है।

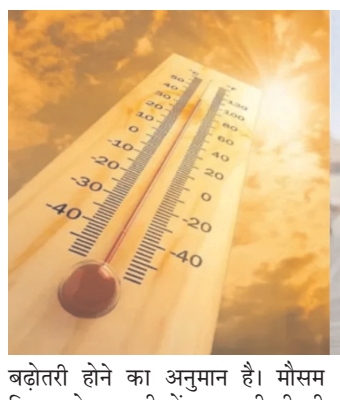

इन राज्यों में ज्यादा दिनों तक चलेगी लू भारत के जिन राज्यों में सामान्य से अधिक लू वाले दिन रहने का अनुमान है, उनमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के उत्तरी हिस्से और तमिलनाडु शामिल हैं। उत्तर प्रदेश (पूर्वी क्षेत्र), झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे कुछ राज्यों में इस अवधि के दौरान 10 से 11 दिन तक लू चल सकती है।

नोएडा में शख्स ने हथौड़े से मारकर की पत्नी की हत्या

गौतम बुद्ध नगर (एजेंसी)। नोएडा के थाना फेस-1 क्षेत्र स्थित सेक्टर-15 में शुक्रवार को एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां अवैध संबंधों के शक में एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की बेरहमी से हत्या कर दी। आरोपी पति ने पत्नी के सिर पर हथौड़े से वार कर उसे मौत के घाट उतार दिया। पुलिस ने बताया कि डायल 112

पर घटना के बारे में सूचना मिली। इसके बाद पुलिस और फॉरेंसिक एक्सपर्ट की टीम मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है, जबकि आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है। बताया जा रहा है कि दोनों के बीच कई दिनों से लड़ाई चल रही थी। दरअसल, पूरा मामला थाना फेस-1 के सेक्टर-15 का है। यहां एक महिला की हत्या से सनसनी मच गई। डीसीपी रामबदन सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस को वारदात की सूचना मृतक महिला के बेटे ने डायल 112 के माध्यम से दी।

दिल्ली पुलिस के मालखाने में लगी भीषण आग

100 से भी ज्यादा गाड़ियां जलकर हुई खाक

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के नेहरू प्लेस स्थित पुलिस मालखाने में गुरुवार दोपहर आग लगने से ट्रैफिक पुलिस द्वारा जब्त की गई 100 से ज्यादा गाड़ियां जलकर खाक हो गईं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि घटना के सिलसिले में एक स्न्नढ्ढक्र दर्ज की गई है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि इसके पीछे कोई साजिश तो नहीं है। उन्होंने बताया कि आग लगने के संबंध में दोपहर 2 बजकर 2 मिनट पर फोन आया था। शुरू में दिल्ली फायर सर्विस यानी कि ष्ठस्न्नस् ने कहा था कि मालखाने में खुले क्षेत्र में रखे दोपहिया, तिपहिया और चार पहिया गाड़ियों सहित लगभग 50 गाड़ियों में आग लगी है।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि आग को पूरी तरह से बुझाने की प्रक्रिया जारी है, लेकिन अंदाजा है कि 100 से ज्यादा गाड़ियां जलकर खाक हो गईं। उन्होंने कहा, 'शुरू में पुलिस ने दमकल की 6 गाड़ियां मौके पर भेजी थीं। सूचना मिली है कि आग में कुछ ऐसी गाड़ियां भी जल गईं, जिन्हें आपराधिक मामलों में जब्त किया गया था।' वहीं, ष्ठस्न्नस् के अधिकारी ने कहा, 'आग की लपटों पर काबू पाने में तीन घंटे से भी ज्यादा का समय लगा। घटना की जांच की जा रही है।' सूत्रों ने बताया कि यह मालखाना दिल्ली ट्रैफिक पुलिस का है और ट्रैफिक

हेडक्वॉर्टर के अधिकारी प्रभावित गाड़ियों की संख्या की जांच करने के लिए तुरंत मौके पर पहुंच गए।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के सूत्रों ने बताया कि रिपोर्ट से पता चलता है कि ट्रैफिक पुलिस द्वारा बड़ी संख्या में जब्त की गई दोपहिया और चारपहिया गाड़ियां (जिनमें दुर्घटनाग्रस्त गाड़ियां भी शामिल हैं) इस मालखाने में रखे गए थे। आग लगते ही पूरे इलाके में धुएं का गुबार फैल गया, जो दूर से ही दिखाई दे रहा था।

मुंबई कांग्रेस को पुलिस ने भेजा नोटिस

नहीं भरा था AICC इंचार्ज सीक्रेटरी के होटल स्टे का बिल

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में कांग्रेस के हाल-बेहाल नजर आ रहे हैं। महाराष्ट्र पुलिस ने अब एक मामले को लेकर मुंबई कांग्रेस को नोटिस दिया है। यह नोटिस एक होटल का बिल न भरने को लेकर दिया गया है, बता दें कि मुंबई कांग्रेस की हालत को लेकर पिछले दिनों भी खबर आई थी कि उन्होंने बिजली बिल नहीं भरा था तो मुंबई कांग्रेस के दफ्तर की बिजली गुल होने की नौबत सामने आ गई थी। अब नया मामला होटल बिल को लेकर है।

जानकारी दे दें कि ढ्ढष्टष्ट इंचार्ज सीक्रेटरी इस होटल में रूके थे, जिसका पूरा डिटेल होटल ने पुलिस को दिया है। साथ ही बताया कि होटल का पूरा बिल 51,115 रुपये बना है जो मुंबई कांग्रेस के एक पदाधिकारी की ओर से नहीं दिया जा रहा। होटल ने मुंबई कांग्रेस के पदाधिकारी का नाम भी शिकायत में बताया। शिकायत विले पार्ले पुलिस स्टेशन में दी गई है। पुलिस को दी गई शिकायत में होटल की ओर से कहा गया कि हम कांग्रेस के

पदाधिकारी से मार्च 2024 से पेंडिग बिल को लेकर फॉलोअप कर रहे हैं। हम जब भी कॉल करते हैं वे हमें वादा करते हैं कि एक हफ्ते के अंदर हम पेमेंट कर देंगे। ऐसा करते-करते आज 5 माह हो चुके हैं और अब तक हमें यह पेमेंट नहीं मिले। आगे कहा कि काफी फॉलो अप करने पर हमें 14 जून 2024 को पदाधिकारी की ओर से बिना किसी तारीख और साइन के एक चेक दिया गया और कहा गया कि अभी साइन करने वाले पदाधिकारी दिल्ली गए हैं जो 6-7 दिन में आ जाएंगे फिर आपके चेक पर साइन हो जाएगा। इसके बाद हम उन्हें 3-4 दिन के अंतरात पर कॉल-मैसेज करते रहे। करीबन 10-15 दिनों से अब वे हमारा फोन नहीं उठा रहे और न ही हमारे किसी मैसेज का रिप्लाई दे रहे। जानकारी दे कें कि मुंबई कांग्रेस की अध्यक्ष सांसद वर्षा गायकवाड़ हैं। इससे पहले भी मुंबई कांग्रेस के खस्ताहाल आर्थिक स्थिति का मामला उठा था, पूर्व कांग्रेस नेता संजय निरुपम ने भी वर्षा गायकवाड़ पर लापरवाही पर आरोप लगाया था।

लगातार खराब हो रही गाजीपुर लैंडफिल की हालत

एनजीटी की रिपोर्ट में डराने वाले खुलासे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के गाजीपुर लैंडफिल की हालत लगातार खराब होती जा रही है। एनजीटी की रिपोर्ट में कई हैरान करने वाले खुलासे हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, गाजीपुर लैंडफिल के चारो तरफ दीवार नहीं है, इसकी ऊपरी सतह पर दरारें पड़ रही हैं। वहीं, यहां से निकलने वाला पानी यमुना में जाकर मिल रहा है। 70 एकड़ में फैले गाजीपुर लैंडफिल की निगरानी एमसीडी करती है और पूर्वी दिल्ली का कचरा यहीं डंप किया जाता है। यह जगह पोल्ट्री मार्केट, मछली मार्केट, डेयरी और सब्जी मार्केट, बूचड़खाने और कचरे से एनर्जी बनाने वाले (डब्ल्यूटीई) संयंत्र से घिरी हुई है।

गाजीपुर लैंडफिल में गर्मी के समय आग लगने की कई घटनाएं सामने आती रहती हैं। पिछले साल भी ऐसी कई घटनाएं हुई थीं। इसके बाद एनजीटी ने इस मामले पर

स्वतः संज्ञान लिया। रिपोर्ट के अनुसार, लैंडफिल की ऊंचाई 40 मीटर से बढ़कर अब 60 मीटर से अधिक हो गई है। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार, 2017 में लैंडफिल की ऊंचाई 50 मीटर थी। एमसीडी अधिकारियों के अनुसार, इस साइट पर कचरा डंप करने की क्षमत 100 लाख मीट्रिक टन है, लेकिन यहां इससे ज्यादा कचरा डंप हो चुका है।

26 मार्च को किए गए सर्वे में सामने आया कि एक लीचेट टैंक का दूषित पानी नाले में गिर रहा है, जो आगे चलकर यमुना नदी में मिलता है। (जब बारिश का पानी किसी डंपसाइट में कचरे से होकर गुजरता है तो लीचेट बनता है। जब लीचेट जमा कचरे के संपर्क में आता है तो खतरनाक केमिकल बाहर आते हैं, जिससे आस-पास के इलाकों में प्रदूषण का खतरा बढ़ जाता है।) रिपोर्ट में कहा गया है कि लैंडफिल के आसपास महत्वपूर्ण इमारतें हैं, जिनमें सरकारी विनियमित बाजार भी शामिल हैं। यह लैंडफिल घनी आबादी वाले क्षेत्र में है, जिसके ठीक पीछे हिंडन नदी बहती है। इससे लीचेट के फैलने का खतरा बढ़ जाता है।

गाजीपुर लैंडफिल गेट के पास दो ट्रॉमेल (पानी से कचरा अलग करने का उपकरण) काम करते पाए गए, जबकि दावा किया गया था कि इस इलाके को पूरी तरह से साफ कर दिया गया है। इसके अलावा हिंडन नहर के पास और एमसीडी बूचड़खाने के पास कोई बाउंड्री नहीं है। ऐसे में कचरा बाहर की तरफ धंस सकता है। इससे आम लोगों और पास से गुजरने वाले वाहन इसकी चपेट में आ सकते हैं। असामाजिक तत्व यहां से अंदर पहुंचकर आग भी लगा सकते हैं।

बच्चे के मुंडन के दिन पति-पत्नी ने फांसी लगाकर आत्महत्या की

इटावा (एजेंसी)। यूपी के इटावा से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक बच्चे के मुंडन के दिन पति-पत्नी ने फांसी लगाकर जान दे दी है। ये पति-पत्नी पहले रिश्ते में देवर-भाभी थे लेकिन बाद में इन्होंने आपस में शादी कर ली थी। मामला इटावा के बकेवर थाने के हरराजपुर का है। यहां गृह कलेश के चलते दंपति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की जानकारी पर पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। एक साल पहले मृतक 23 वर्षीय विशाल बाथम ने अपने बड़े भाई राहुल की पत्नी यानी अपनी भाभी रोशनी (उम्र- 25 साल) से विवाह कर लिया था। तभी से दोनों किराए के मकान में रह रहे थे। आज शुक्रवार को घर के अंदर पहले रोशनी ने साड़ी के फंदे से आत्महत्या की। उसके बाद पति जब अपने बच्चे श्रेयांश का दूध लेकर घर आया तो देखा कि पत्नी रोशनी का शव फंदे पर लटका है।

रामनवमी के दिन न्यू पंबन रेल ब्रिज का पीएम मोदी करेंगे उद्घाटन

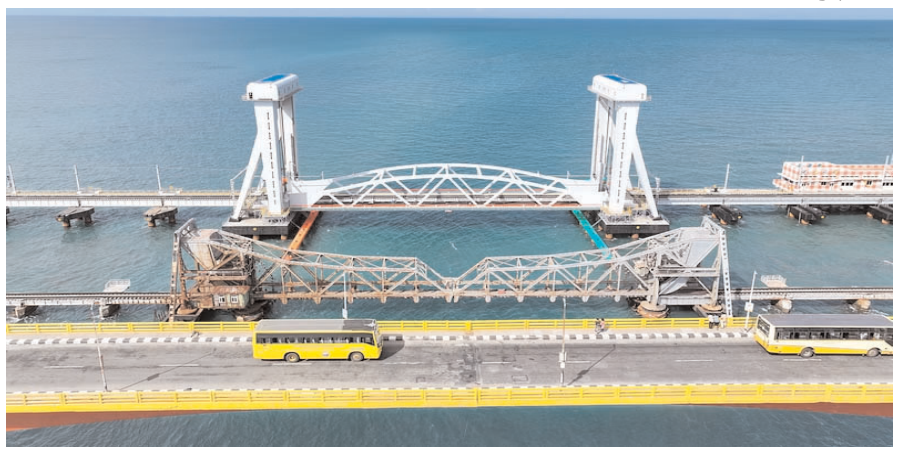

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत का पहला वर्टिकल लिफ्ट समुद्री पुल यानी नए पंबन रेल पुल का उद्घाटन पीएम नरेंद्र मोदी रामनवमी के अवसर पर रविवार को करेंगे। रोडब्रिज से एक ट्रेन और एक जहाज को

● रामेश्वरम में रामनाथस्वामी मंदिर में दर्शन और पूजा करेंगे

पीएम नरेंद्र मोदी हरी झंडी दिखाएंगे और पुल के संचालन को देखेंगे। उद्घाटन के बाद पीएम नरेंद्र मोदी रामेश्वरम में रामनाथस्वामी मंदिर में दर्शन और पूजा करेंगे। बता दें कि पंबन पुल का गहरा सांस्कृतिक महत्व है। रामायण के अनुसार, ÷राम सेतु का निर्माण रामेश्वरम के

पास धनुषकोडी से शुरू हुआ था।÷ बता दें कि 550 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 2.08 किमी लंबे इस पुल का निर्माण किया गया है जो रामेश्वरम को मुख्य भूमि से जोड़ता है। इसमें 99 स्पैन और 72.5 मीटर का वर्टिकल लिफ्ट स्पैन है जो 17 मीटर की ऊंचता तक उठता है, जिससे जहाजों की सुचारू रूप से आवाजाही भी हो सकेगी और ट्रेन का भी निर्बाध संचालन हो सकेगा। स्टेनलेस स्टील, हाई लेवल के पेंट्स का इस ब्रिज में इस्तेमाल किया गया है। इसे भविष्य की मांगों को लेकर तैयार किया गया है। प्रधानमंत्री कार्यालय ने अपने बयान में कहा कि दोपहर करीब डेढ़ बजे पीएम नरेंद्र मोदी राज्य में 8300 करोड़ रुपये से अधिक की लागत की विभिन्न रेल और सड़क परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे और उन्हें राष्ट्र को समर्पित करेंगे। इस अवसर पर वह वहां उपस्थित लोगों को संबोधित भी करेंगे।

इस परियोजनाओं का सभी को मिलेगा लाभ सरकार के अनुसार, इन परियोजनाओं में एनएच-40 के 28 किलोमीटर लंबे वालाजापेट-रानीपेट खंड को चार लेन का बनाने का शिलान्यास और एनएच-332 के 29 किलोमीटर लंबे विलुप्पुरम-पुडुचेरी खंड को चार लेन का बनाने का काम, एनएच-32 के 57 किलोमीटर लंबे पूंडियांकुप्पम-सत्तनाथपुरम खंड और एनएच-36 के 48 किलोमीटर लंबे चोलापुरम-तंजावुर खंड को देश को समर्पित करना शामिल है। ये राजमार्ग कई तीर्थस्थलों और पर्यटन स्थलों को जोड़ेंगे, शहरों के बीच की दूरी कम करेंगे और मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, बंदरगाहों तक तेजी से पहुंच बनाने के अलावा स्थानीय किसानों को कृषि उत्पादों को नजदीकी बाजारों तक पहुंचाने और स्थानीय चमड़ा और लघु उद्योगों की आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने में सशक्त बनाएंगे।

भोपाल स्थित 6 संस्थान ईट राइट कैम्पस घोषित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारतीय खाद्य संरक्षा और मानक प्राधिकरण, भारत सरकार के द्वारा भोपाल स्थित वल्लभभवन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट, एम.पी. वाल्मी, ताज लेकफ्रंट होटल, एस.एम.एच. हॉस्पिटल, तथा अपोलो सेज हॉस्पिटल को ईट राइट कैम्पस घोषित किया गया है। ईट राइट कैम्पस प्रमाणन की प्रक्रिया के दौरान संस्थानों में खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 के समस्त प्रावधानों के अनुपालन की जांच की जाती है। प्रशिक्षित पर्यवेक्षकों की देखरेख में स्वच्छतापूर्वक वातावरण में सुरक्षित तथा गुणवत्तापूर्ण भोजन प्रदाय करने वाले संस्थानों को फूड सेफ्टी ऑडिट के उपरांत ईट राइट कैम्पस घोषित किया जाता है। भोपाल में वर्ष 2022 से प्रशासनिक एकादमी, हमीदिया हॉस्पिटल, अक्षय पात्रा, ऐम्स भोपाल, जे.पी. हॉस्पिटल जैसे कुल 25 संस्थानों को ईट राइट कैम्पस की मान्यता प्राप्त हो चुकी है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा अपेक्षा किये जाने पर खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा भोपाल स्थित 6 विद्यालयों में बनाये जा रहे मिड-डे-मील के नमूने एकत्र किये गये। श्री देवेन्द्र कुमार वर्मा अभिहित अधिकारी, भोपाल के निर्देशानुसार माध्यमिक शाला ईंटखेड़ी सड़क, माध्यमिक शाला कोंडिया, माध्यमिक शाला अरवलिया, माध्यमिक शाला सैमरा सैयद, माध्यमिक शाला बगोनिया तथा चन्द्रशेखर आजाद शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रातीबड़ में विद्यार्थियों हेतु बनाये गये खीर, सब्जी, पुड़ी, पके हुये चावल, कढ़ी आदि के नमूने एकत्र कर राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला, भोपाल प्रेषित किये गये।

जनभागीदारी से जल गंगा संवर्धन अभियान को मिल रही गति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जनभागीदारी से जल संरक्षण के कार्य तेजी से जारी हैं। इन कार्यों में समाज के सभी वर्गों का सक्रिय सहयोग देखने को मिल रहा है। गुरुवार को जनपद बैरसिया के ग्राम पंचायत बरखेड़ी हज्जाम, बीनापुर अगरिया, खजूरी, बोरदा, मुबारकपुर, कालापानी एवं सुरैया नगर में श्रमदान के माध्यम से पोखरों का गहरीकरण एवं कुओं की साफ-सफाई की गई। जिले में जनपद पंचायत बैरसिया एवं फंदा क्षेत्रों में 107 खेत तालाबों का निर्माण प्रारंभ करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही अमृत सरोवर योजना (फेस 2.0) के अंतर्गत दामखेडा, उनींदा, परसोरा, पसैया (सेमरा), गढ़ाखुर्द एवं रमाहा ग्राम पंचायतों में अमृत सरोवर तालाबों का चयन किया गया है। मनरेगा के अंतर्गत जल संरक्षण कार्यों को गति देते हुए 1905 प्रगतिरत कार्यों में से 837 कार्यों को पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अलावा, प्रत्येक प्रगतिरत कपिलधारा कूप का निर्माण भी सुनिश्चित किया जाएगा। जिले में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व वाले जल स्त्रोतों की साफ-सफाई और जीर्णोद्धार का कार्य भी समान रूप से जारी है, जिससे समाज में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता और सहभागिता को नई दिशा मिल रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अरविंद जोशी के निधन पर दी श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने माधवाश्रम न्यास गौशाला के संस्थापक व पूर्व अध्यक्ष श्री अरविंद जोशी के निधन पर उनके इन्दौर स्थित स्नेह नगर निवास पहुंचकर शोक व्यक्त किया है। श्री अरविंद जोशी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह एवं वर्तमान में अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री सुरेश भैयाजी जोशी के बड़े भाई थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोक संतप्त परिवार को ढ़ांढस बंधाया। उन्होंने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए बाबा महाकाल से पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने तथा दु:ख की इस घड़ी में शोकाकुल परिजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना की।

मंत्री सारंग ने राजेंद्र नगर में स्टेडियम का किया भूमिपूजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने गुरुवार को नरेला विधानसभा के वार्ड 37, राजेंद्र नगर में नवीन स्टेडियम के निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि राज्य सरकार खेलों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और इसी दिशा में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक आधुनिक खेल परिसर का निर्माण किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि खेल और शारीरिक गतिविधियाँ युवाओं के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने बताया कि इस स्टेडियम के निर्माण से क्षेत्र के नागरिकों को व्यायाम के साथ ही युवाओं को खेल सुविधाएँ उपलब्ध होंगी, जिससे वे अपनी प्रतिभा को निखार सकेंगे। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, खेल संचालक श्री राकेश गुप्ता, संयुक्त संचालक श्री बी.एस. यादव, खेल प्रेमी एवं गणमान्य नागरिकों ने बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि यह स्टेडियम क्षेत्र के युवाओं और खेल प्रेमियों के लिए एक बड़ी सौगात है। यहाँ विभिन्न खेलों के लिए विशेष सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी, जिससे खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार खेलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है और इसी क्रम में क्षेत्र में खेल मैदानों का उन्नयन किया जायेगा साथ ही क्लस्टर बनाकर नये खिलाड़ियों को तैयार करेंगे।

मंत्री श्री सारंग ने जानकारी देते हुए बताया कि स्टेडियम का निर्माण लगभग 8 हजार वर्गमीटर क्षेत्र में किया जाएगा, जिसमें से लगभग 4,000 वर्गमीटर में खेल मैदान विकसित किया जाएगा। यह स्टेडियम खिलाड़ियों की विभिन्न आवश्यकताओं एवं नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है, जिसमें विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी। उन्होंने बताया कि स्टेडियम परिसर में इंडोर बैडमिंटन कोर्ट, वॉलीबॉल कोर्ट, और मल्टीपरपज़ हॉल की सुविधा उपलब्ध होगी। खेल गतिविधियों के अलावा, यहाँ एक मंच (स्टेज) भी बनाया जाएगा, जहाँ सांस्कृतिक एवं खेल से संबंधित आयोजनों का संचालन किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त, खिलाड़ियों और दर्शकों की सुविधा के लिए कार एवं बाइक पार्किंग, लैंडस्केप एरिया, कार्यालय कक्ष, और बाउंड्री वॉल का निर्माण भी किया जाएगा, जिससे सुरक्षा और संरचना को मजबूती मिलेगी।

प्रथम चरण में फुटबॉल तथा अन्य खेल के मैदान का विकास, वॉलीबाल कोर्ट का निर्माण, मैदान सुरक्षा दीवार, भव्य प्रवेश द्वार, हाइ मास्ट प्रकाश व्यवस्था (रात्रि खेल हेतु), खिलाड़ियों के लिए डग हाउस, जनसुविधा केंद्र, पाथवे (मॉर्निंग/इवनिंग वॉक हेतु) एवं स्टेज उन्नयन का कार्य किया जायेगा। वहीं द्वितीय चरण में बैडमिंटन कोर्ट,मल्टी परपज हॉल (टेबल टेनिस, बोर्ड गेम्स, लाईब्रेरी, इनडोर खेल), ओपन जिम, प्रबंधन कार्यालय तथा स्टोर एवं पार्किंग तथा लैंड स्कैप का निर्माण किया जायेगा।

विद्यालय और कक्षा से दूरी नहीं बनायें विद्यार्थी -मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल स्कूल चले हम'' अभियान के अंतर्गत तीसरे दिन गुरुवार को शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला केरपानी में शाला उत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने बच्चों को प्रेरणादायी बातें बताई और उनका हौसला बढ़ाया। मंत्री श्री पटेल ने विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद कर उनके जीवन के लक्ष्य के बारे में जाना। उन्होंने कहा कि मन में कोई जिज्ञासा बचा कर नहीं रखें। सवाल पूछने की आदत अपने जीवन में शामिल करें। मंत्री श्री पटेल व अन्य अतिथियों ने विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य- पुस्तकों का वितरण किया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ज्योति नीलेश काकोड़िया व उपाध्यक्ष श्रीमती अनीता राजेन्द्र ठाकुर, पूर्व राज्यमंत्री श्री जालम सिंह पटेल अन्य जनप्रतिनिधि, कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले, पुलिस अधीक्षक श्रीमती मृगाखी डेका, सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार सहित अन्य अधिकारी- कर्मचारी, विद्यार्थी, उनके माता-पिता, अभिभावक और ग्रामीणजन मौजूद थे। मंत्री श्री पटेल ने सभी नवप्रवेशी बच्चों को शुभकामनायें देते हुए कहा कि स्कूल चलें हम'' अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए ग्रामीण क्षेत्र के स्कूल को चुना। पहले यह छुट्टियों का समय हुआ करता था। मंत्री श्री पटेल ने बताया कि विद्यालय में दर्ज संख्या के अनुसार कई कई विद्यार्थियों के नहीं आने का कारण भी जानकर इस पर विचार करना होगा। इस मामले में स्वयं को भाग्यशाली मानते हुए मंत्री श्री पटेल ने अपने छात्र जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि उनके पिताजी ने हमेशा पढ़ाई और खेलों को बराबर महत्व दिया है। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी को कॅरियर काउंसलिंग के सत्र आयोजित करने के निर्देश भी दिये। मंत्री श्री पटेल ने विद्यार्थियों से कहा कि आप सभी संकल्प लें कि आप अपने जीवन को बेहतर बनाकर गांव व समाज का नाम रोशन करेंगे। हम नर्मदा तट पर रहने वाले लोग हैं। यहां न जाने कितने परिक्रमावासी प्रतिदिन यहां से गुजरते हैं। हम सिर्फ उनके भोजन व विश्राम की जरूरतें पूरी करते हैं। आप इन परिक्रमावासियों से जब भी मिलें, तो उनसे उनके जीवन के अनुभव और उनकी इस यात्रा के बारे में अवश्य जानें।

नीति आयोग से आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर खंडवा को मिला 3 करोड़ रुपये का पुरस्कार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम में खंडवा ज़िले ने स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में असाधारण प्रगति की है। नीति आयोग ने खंडवा के उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना की है। नीति आयोग ने बेहतर कार्यों के लिये खंडवा ज़िले को 3 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की है। इस उपलब्धि के लिये ज़िले में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने और कुपोषण के खिलाफ व्यापक रणनीति अपनाने के प्रयास प्रमुख रहे हैं। खंडवा की उपलब्धि मध्यप्रदेश के लिए गर्व का विषय- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल उपलब्धि पूरे मध्यप्रदेश के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार सुधार हो रहा है।

आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम में इस तरह की सफलता प्रदेश के अन्य जिलों के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बनेगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह उपलब्धि खंडवा प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा और एएनएम के सतत प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने सभी विभागीय अधिकारियों, मैदानी कार्यकर्ताओं की सराहना की है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ओ.पी. जुगतावत ने बताया कि ज़िले में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिये योजनाबद्ध प्रयास किए गए।

वन विहार में सिल्कन सीक्रेट्स स्पाइडर वॉक 5 अप्रैल को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफरों के लिये छोटे जीवों की रहस्यमयी और विविधतापूर्ण दुनिया को देखने के लिये शनिवार 5 अप्रैलको सुबह 7 से 9 बजे तक सिल्कन सीक्रेट्स नामक एक विशेष वॉक का आयोजन किया जा रहा है।

सिल्कन सीक्रेट्स स्पाइडर वॉक का नेतृत्व प्रसिद्ध मैक्रो फोटोग्राफर श्री आशिर कुमार करेंगे, जिन्हें 1 फ्रेममेन के नाम से जाना जाता है। वन्य-जीवों, पक्षियों, जानवरों, कीड़ों और विशेष रूप से मकड़ियों को बारीकी से कैद करने में 5 वर्षों से अधिक की विशेषज्ञता के साथ श्री आशिर के काम को कैनन इण्डिया, इण्डिया टाइम्स, हिन्दुस्तान टाइम्स जैसे प्लेटफार्म द्वारा प्रदर्शित किया गया है। उनकी पुरस्कृत तस्वीरों को सम्पूर्ण भारत की प्रतिष्ठित दीर्घाओं में प्रदर्शित किया गया है। सिल्कन सीक्रेट्स प्रतिभागियों को अक्सर कीटों और मकड़ियों कीअनदेखी दुनिया में ले जायेगा, जहाँ उनके छिपे हुए जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र में उनकी आवश्यक भूमिकाओं को दिखाया जायेगा। प्रसिद्ध फोटोग्राफर श्री आशिर के मार्गदर्शन में वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफरों को अपने मैक्रो फोटोग्राफी कौशल को निखारने और प्रकृति के छोटे-छोटे अजूबों को करीब से देखने का मौका मिलेगा। भोज वेटलैण्ड, जो 445.21 हेक्टेयर में फैला हुआ है, इसके पास स्थित वन विहार राष्ट्रीय उद्यान इस अन्वेषण के लिये एकदम सही अवसर प्रदान करता है। समृद्ध जैव विविधता, शांत परिवेश के साथ वन विहार एक की सैर के लिये एक आदर्श स्थान है। संचालक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान ने बताया कि सिल्कन सीक्रेट्स स्पाइडर वॉक में भाग लेने वाले प्रतिभागी को आरामदायक जूते, पानी की बॉटल, सिर पर टोपी, मच्छर भगाने वाली क्रीम, फोटोग्राफी के लिये कैमरा या मोबाइल फोन अवश्य साथ लायें।

10 जल विद्युत गृहों ने उत्पादित की 2757 मिलियन यूनिट बिजली- ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के जल विद्युत गृहों ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में मध्यप्रदेश नियामक आयोग द्वारा निर्धारित वार्षिक उत्पादन लक्ष्य को पार करते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया। मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग ने पॉवर जनरेटिंग कंपनी के जल विद्युत गृहों के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 में 2694 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। जल विद्युत गृहों ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 2757 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन किया। जल विद्युत गृहों द्वारा वर्ष 2020-21 के बाद यह उपलब्धि? हासिल की। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी की जल विद्युत उत्पादन क्षमता 915 मेगावाट है मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के इस उपलब्धि में 90 मेगावाट स्थापित क्षमता के रानी अवंतीबाई सागर जल विद्युत गृह बरगी, 160 मेगवाट स्थापित क्षमता के पेंच जल विद्युत गृह तोतलाडोह, 315 मेगावाट स्थापित क्षमता के बाणसागर-एक टोंस जल विद्युत गृह सिरमौर, 20 मेगावाट स्थापित क्षमता के बाणसागर-4 जल विद्युत गृह झिन्ना, 45 मेगावाट स्थापित क्षमता के राजघाट जल विद्युत गृह और 60 मेगावाट स्थापित क्षमता के मरहीखेड़ा जल विद्युत गृह ने प्रमुख योगदान दिया।

ओरछा को मिलेगी वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर नई पहचान-प्रमुख सचिव शुक्ला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश का ओरछा, अब वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में नई पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर ओरछा को प्रतिष्ठित पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार ने ओरछा में पर्यटन अधोसंरचनाओं और सुविधाओं के विकास के लिए स्वदेश दर्शन योजना 2.0 में 25 करोड़ रूपये की राशि स्वीकृति की है। स्वीकृत राशि से ओरछा में टूरिस्ट एक्सपीरियंस सेंटर, हुनरशाला, एंट्री प्लाजा के साथ यात्रा पथ का विकास किया जाएगा। इसके पहले दिसंबर माह में विरासतों के संरक्षण और संग्रहालयों के विकास

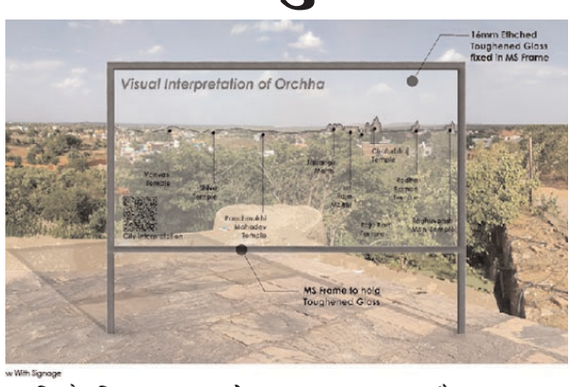

आदि के लिए 99.92 करोड़ रूपये स्वीकृत किए गए थे। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2027-28 में ओरछा को यूनेस्को विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दिए जाने के लिए केंद्र सरकार ने यूनेस्को को सिफारिश की है। साथ ही ओरछा को यूनेस्को की एच.यू.एल. (हिस्टोरिकल अर्बन लैंडस्केप) पहल के तहत चुना गया है।

प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति एवं प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड श्री शिवशेखर शुक्ला ने बताया कि पर्यटन मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन 2.0 उप-योजना के तहत चैलेंज?ड बेस्ड डेसटिनेशन डेवलपमेंट पहल शुरू की है, जिसका उद्देश्य पूरे देश में पर्यटन स्थलों का विकास करना है। इस योजना में, 50 स्थलों (प्रत्येक राज्य में अधिकतम 5) को विकास के लिए चुना जाना है। इसी के तहत ओरछा को आध्यात्मिक गंतव्य स्थल की श्रेणी में चुना गया है। ओरछा में पर्यटकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पर्यटन सुविधाओं के विकास के साथ शहर के सौंदर्यीकरण, ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण और स्थानीय कलाकारों और संस्कृति का संरक्षण किया जाएगा। इससे ओरछा में देशी-विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी और स्थानीय समुदाय को भी आर्थिक लाभ मिलेगा। चैलेंज बेस्ड डेस्टिनेशन डेवलपमेंट के संदर्भ में किए जाने वाले कार्य है।

विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य सह विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार एवं श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश भोपाल के मार्गदर्शन एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण,भोपाल श्री सुनीत अग्रवाल की उपस्थित में 07 अप्रैल 2025 को विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को एल.एन.सी.टी. विश्वविद्यालय, कोलार रोड भोपाल में स्वास्थ्य सह विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री सुनीत अग्रवाल, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, भोपाल, श्री बी.एम. सिंह, जिला विधिक सहायता अधिकारी, भोपाल एवं महाविद्यालय की विधि विभाग प्रमुख अनुष्का नायक ने मां सरस्वती जी की मूर्ति पर हार-फूल अर्पित कर किया। कार्यक्रम में सचिव जिला

विधिक सेवा प्राधिकरण श्री सुनीत अग्रवाल ने सभागार में उपस्थित विधि के विद्यार्थियों एवं महाविद्यालय के शिक्षाविदों एवं स्टॉफ को संबोधित करते हुए कहा कि स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना हम सभी का कर्तव्य है, यदि हम स्वस्थ हैं तो स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं, हमें इस आधुनिक भागदौड़ की जीवनशैली में जरूरत है पौष्टिक आहार एवं नियमित व्यायाम की। साथ ही जल एवं प्रकृति को संरक्षित करना हम सबका दायित्व है, यदि हम प्रकृति को संरक्षित रखते हैं तो हमें स्वस्थ जल, वायु और आहार मिलेगा यदि प्रकृति ही प्रदूषित रहेगी तो उसका दुष्प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर अवश्य पड़ेगा।

जल गंगा संवर्धन अभियान -जनशक्ति से जलसंरक्षण की क्रांति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जल संरक्षण में जनता की भागीदारी का विशेष रूप से उल्लेख किया है। उन्होंने खेत का पानी खेत में, गांव का पानी गांव में के सिद्धांत को अपनाने पर जोर दिया है। इसी सोच को साकार करने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य- जल गंगा संवर्धन अभियान के द्वारा जल संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत नवीन जल संग्रहण संरचनाओं के साथ-साथ पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल स्त्रोतों और जल वितरण प्रणालियों की साफ सफाई, जल स्त्रोतों के आस-पास पौध रोपण के कार्य प्राथमिकता पर किये जा रहे हैं। इसके साथ ही समाज की सहभागिता के लिए जल संरक्षण जागरूकता के कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे हैं। प्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अभियान जनप्रतिनिधि और जनमानस बढ़ चढ़कर भाग ले रहे हैं। गुरुवार को जनपद शिवपुरी की सतेरिया पंचायत में प्राचीन तालाब की गाद निकालने, अनावश्यक झाड़ियों की सफाई के लिए विधायक शिवपुरी श्री देवेन्द्र जैन ने ग्रामवासियों के साथ श्रमदान किया। विधायक देवेन्द्र जैन ने कहा कि आप पानी बचाएंगे तभी पानी आपको बचाएगा।

हम सभी को जल संरक्षण की दिशा में एकजुट प्रयास करने होंगे, तभी आगे की पीढ़ी को पानी मिल पायेगा। एक एक बूँद संरक्षित करने के लिए हर व्यक्ति को प्रयास करने होंगे, तभी इस अभियान की सार्थकता होगी।इंदौर जिले के ग्राम जलोदकेऊ में जल संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस गांव में ग्रामीणों ने श्रमदान कर तालाब का गहरीकरण भी किया। समिति सदस्यों एवं ग्रामीणों के साथ जल संवाद किया गया। जिसमें जल स्त्रोतों का पूजन एवं रख-रखाव के लिये श्रमदान कर पुराने जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करने हेतु चर्चा की गई।

एक लाख 25 हजार 631 किसानों से 10 लाख 25 हजार मीट्रिक टन से अधिक हुई गेहूँ खरीदी - खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर प्रदेश में अभी तक एक लाख 25 हजार 631 किसानों से 10 लाख 25 हजार 735 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया जा चुका है। किसानों को उपार्जित गेहूँ का भुगतान भी लगातार किया जा रहा है। अभी तक 1794 करोड़ 82 लाख रूपये का भुगतान किसानों को किया जा चुका है। गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रूपये है और राज्य सरकार द्वारा 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस दिया जा रहा है। इस तरह से गेहूँ की खरीदी 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से की जा रही है। जिला उज्जैन में एक लाख 93 हजार 362, सीहोर में एक लाख 61 हजार 737, देवास में 90 हजार 740, शाजापुर में 92 हजार 613, इंदौर में 69 हजार 558, भोपाल में 74 हजार 75, राजगढ़ में 66 हजार 47, मंदसौर 42 दमोह में 3557, खरगौन में 565, गुना में 1057, सागर में 1053, नरसिंहपुर में 221, छिंदवाड़ा में 185, अशोकनगर में 119, सिवनी में 1313, सतना में 926, मण्डला में 90, दतिया में 43 और अलीराजपुर में 24, मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया जा चुका है।

जल गंगा संवर्धन अभियान में मऊगंज में होगी नहरों की सफाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान 20 मार्च से आरंभ हो गया है। अभियान में विभिन्न विभागों के साथ-साथ जल संसाधन विभाग भी बढ़चढ़ कर योगदान दे रहा है। अभियान के तहत मऊगंज जिले में 20 प्रमुख सिंचाई नहरों की साफ-सफाई का कार्य 30 जून तक कराया जाएगा। इस संबंध में अधीक्षण यंत्री ने बताया कि नहरों की साफ-सफाई तथा सुधार के लिए कार्ययोजना तैयार कर ली गई है। कार्ययोजना में 21 नहरों की साफ-सफाई का कार्य शामिल किया गया है। मऊगंज जिले में गोरमा मध्यम सिंचाई परियोजना, मदरावल लघु सिंचाई परियोजना, पीताम्बर गढ़ लघु सिंचाई परियोजना तथा गोबरदहा लघु सिंचाई परियोजना की नहरों की साफ-सफाई एवं सुधार कार्य के लिए तकनीकी एवं प्रशासकीय स्वीकृति जारी कर दी गई है।

अधीक्षण यंत्री ने बताया कि मऊगंज जिले में देवरी लघु सिंचाई परियोजना, नैया सिंचाई परियोजना, जुड़ा सिंचाई परियोजना, पतनारी सिंचाई परियोजना, बमरहा लघु सिंचाई परियोजना, अटारी लघु सिंचाई परियोजना, मऊगंज लघु सिंचाई परियोजना तथा रामसागर लघु सिंचाई परियोजना की नहरों में भी सुधार कार्य कराया जाएगा। बेलहा लघु सिंचाई परियोजना, छुहिया सिंचाई परियोजना, कनैहा सिंचाई परियोजना, पड़ार सिंचाई परियोजना, नंदनपुर लघु सिंचाई परियोजना, रकरी लघु सिंचाई परियोजना, कदुआवान लघु सिंचाई परियोजना, पिपरछता लघु सिंचाई परियोजना तथा लालगंज सिंचाई परियोजना के बांधों से घास एवं गाद हटाने का कार्य किया जाएगा। जल संवर्धन अभियान के तहत सभी सिंचाई बांधों और नहरों में सुधार कार्य, एप्रोच चैनल से गाद हटाने तथा घास एवं खरपतवार की साफ-सफाई कराई जाएगी। इन कार्यों से पानी की बचत होने के साथ-साथ अधिक क्षेत्र में सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो सकेगा। बांधों की साफ-सफाई तथा गाद निकालने से उनकी जल संग्रहण क्षमता में वृद्धि होगी। जल गंगा संवर्धन अभियान से नहरों और छोटे बांधों को नया जीवन मिलेगा।

गर्मी की ऋतु में आमजन व पशु पक्षियों को पेयजल व आश्रय की व्यवस्था सुनिश्चित करायें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गर्मी के मौसम में आम जनता व पशु पक्षियों को पेयजल व आश्रय की व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट मऊगंज संजय कुमार जैन द्वारा दिये गये हैं। उन्होंने कहा है कि आम नागरिकों के लिए सार्वजनिक स्थानों यथा बस स्टैंड, प्रमुख चौराहों, उद्यानों, प्रमुख हांट बाजारों तथा समस्त कार्यालयों में निःशुल्क पेयजल उपलब्ध कराने हेतु समुचित प्याऊ की व्यवस्था कराई जाय। पशुओं के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु स्थलों का चयन कर हौदी/पौंड बनवाकर रखवाए जाएँ तथा उसमें प्रतिदिन पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाए ताकि निराश्रित पशु अपनी प्यास बुझा सकें। पक्षियों हेतु सकोरे आदि की व्यवस्था घर-घर में हो इस हेतु अभियान चलाया जाए।

उन्होंने आम नागरिकों हेतु यथासंभव आश्रय स्थल की व्यवस्था करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा है कि पशुओं के ठहरने के लिए भी आवश्यक व्यवस्थाएं की जाए। लू से बचाव हेतु पर्याप्त उपाय किये जाए तथा जन जागरुकता अभियान के साथ ही समुचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाए। शीतल पेयजल की व्यवस्था किया जाना भी उचित होगा। उन्होंने व्यवस्थाएं आगामी 3 दिवस में कराने के निर्देश दिये हैं। इस कार्य में अधिकाधिक जन भागीदारी यथा आम नागरिक, स्वयं सेवी संस्थाओं, विभिन्न संगठनों एवं उद्योगपतियों आदि का अधिकाधिक जन सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

पेट्रोल पंप से डिब्बे या बोतल में अथवा खुले रूप में पेट्रोल व ज्वलनशील पदार्थ का विक्रय प्रतिबंधित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट मऊगंज संजय कुमार जैन ने मऊगंज जिले में पेट्रोल पंप से डिब्बे या बोतल में किसी भी खुले रूप में पेट्रोल एवं अन्य ज्वलनशील पदार्थों का विक्रय प्रतिबंधित कर दिया है। उन्होंने पुलिस अधीक्षक के प्रतिवेदन पर इस तरह की गतिविधियों से शांति, सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखे जाने/जन सामान्य के हित/जानमाल एवं लोक शांति को बनाये रखने के उद्देश्य से मऊगंज जिले की सीमा में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के अंतर्गत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है।यह आदेश सर्व साधारण को सम्बोधित है एवं परिस्थितियां ऐसी है कि समय अभाव के कारण सर्वसाधारण को सूचना तामील नहीं की जा सकती और न ही सर्व साधारण से आपत्तियों प्राप्त की जा सकती है।

अतः यह आदेश एक पय पारित किया गया है। आदेश का प्रचार-प्रसार स्थानीय समाचार पत्रों/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से कराया जायेगा। आदेश का उल्लंघन होने पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 तथा अन्य समस्त प्रावधानों के अंतर्गत कार्यवाही की जावेगी। यह आदेश तत्काल प्रभाव से प्रभावशील होगा।

सुपर सीडर से गेहूं, चने की बुवाई पर 1650 रूपये प्रति एकड का अनुदान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। खेतों में फसल अवशेष (नरवाई) प्रबंधन के समुचित प्रयोग के लिए भारत सरकार द्वारा खाद्य एवं पोषण सुरक्षा योजना के तहत किसानों को नरवाई प्रबंधन तकनीक अपनाने प्रोत्साहित किया जा रहा है। उप संचालक कृषि मनोज कश्यप ने बताया कि इस तकनीक के तहत ''हैप्पीसीडर सुपरसीडर'' से धान की फसल के बाद सीधे गेहूं और चने की बुवाई की जाती है। तकनीक को अपनाने पर किसानों को 1650 रूपये प्रति एकड का अनुदान भी दिया जाता है। इसके अलावा खाद्य एवं पोषण सुरक्षा गेहूं योजना के तहत नरवाई प्रबंधन तकनीक से गेहूं प्रदर्शनों के आयोजन पर 9 हजार रूपये प्रति हेक्टेयर अनुदान देने का प्रावधान है। उप संचालक कृषि सतना मनोज कश्यप ने जिला परामर्श दाता सुबोध कुमार जैन के साथ विकासखण्ड अमरपाटन के मौहारी, कटरा एवं सिलपरी गांव में आयोजित प्रदर्शनों का अवलोकन किया और किसानों से फीडबैंक भी लिया।

मनरेगा के अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी को जनपद कार्यालय नईगढ़ी संबद्ध किया

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज कलेक्टर संजय कुमार जैन ने मऊगंज के अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा नीतू सिंह को सोशल मीडिया में पैसे के लेन देन के संबंध में चर्चा करते हुए वीडियो वायरल होने पर स्वयं संज्ञान लेते हुए तत्काल प्रभाव से जनपद नईगढ़ी सम्बद्ध कर दिया है। उन्होंने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत रीवा/मऊगंज से जांच समिति गठित कर प्रतिवेदन मांगा है। कलेक्टर ने सीईओ जनपद नईगढ़ी को निर्देश दिये हैं कि आगामी आदेश तक नीतू सिंह को किसी भी शाखा का दायित्व न सौंपा जाय।

लू से बचाव हेतु एडवाइजरी जारी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा गर्मी से मानव स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों एवं रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी ने नागरिकों से अपील की है कि लू (तापघात) के लक्षण दिखाई देते ही निकट के अस्पताल में संपर्क कर आवश्यक दवा का उपयोग सुनिश्चित करें। लू (तापघात) के प्रकोप से बचाव के उपाय करें। उन्होंने बताया कि तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर ओर उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का ना आना, सिर में भारीपन और दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना और पेशाब कम आना, भूख कम लगना एवं बेहोश हो जाना लू (तापघात) के प्रमुख लक्षण एवं संकेत हैं।

लू से बचाव के उपाय हेतु पानी अधिक मात्रा में पीयें, अधिक समय तक धूप में न रहे, बहुत अनिवार्य हो तो ही घर से बाहर जायें, बच्चे, बुजुर्ग एवं बीमार व्यक्ति घर से बाहर कम निकले, विशेषतः दोपहर 12 बजे से सायं 4 बजे के मध्य घर से बाहर न जायें, धूप में निकलने से पहले सर एवं कानों को कपडे से अच्छी तरह से ढक लें, गर्मी के दौरान नरम, मुलायम सूती हल्के ढीले-ढाले सूती वस्त्र पहनना तथा धूप में चश्मा, छाता, टोपी एवं जूता पहन कर घर से निकले। अधिक पसीना आने की स्थिति में ओआरएस घोल, लस्सी, मट्ठा एवं फलों का रस पीयें शरीर में मिनरज की कमी न होने दें, गरिष्ठ एवं मसालेदार भोजन से बचे, चक्कर आने मितली आने पर छायादार स्थान पर आराम करें तथा शीतल पेयजल अथवा उपलब्ध हो तो फल का रस, लस्सी, मट्ठा आदि का सेवन करें, उल्टी, सर दर्द, तेज बुखार की दशा में निकट के अस्पताल अथवा स्वास्थ्य केन्द्र से परामर्श लें, यात्रा के समय पानी की बोतल, ओ.आर.एस. पैकेट साथ में रखे। इत्यादि का सेवन लाभदायक होता है। इनका सभी उपायों का उपयोग कर गर्मी के प्रभाव से बचा जा सकता हैं।

ई-केवायसी के लिए 31 मई तक चलेगा विषेश अभियान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। शासन के विज्ञान और प्रोद्योगिकी विभाग के निर्देशानुसार प्रदेश में समग्र पोर्टल में नागरिकों के समग्र आईडी का आधार के साथ शत-प्रतिशत ई-केवायसी पूर्ण कराने के लिए 1 अप्रैल से 31 मई 2025 तक विशेष अभियान चलाया जायेगा। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने बताया कि शासन द्वारा समस्त विभागीय योजनाओं और सेवाओं में तथा आईएफएमआईएस में शासकीय कर्मचारियों के लिए ई-केवायसी सत्यापित समग्र आईडी को अनिवार्य किया गया है। सतना जिला अंतर्गत अभियान अवधि के दौरान सभी ग्राम पंचायत और वार्ड लेबल पर 31 मई 2025 तक विशेष कैंपों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें वार्ड प्रभारी और ग्राम रोजगार सहायक, सचिव तथा सेवा प्रदाता एजेंसी एमपी आनलाइन, सीएससी, एलएसके के माध्यम से ई-केवायसी की जायेगी। ई-केवायसी की प्रक्रि या सभी नागरिकों के लिए निःशुल्क रखी गई है। सतना जिले की जनपद पंचायत और नगरीय निकायों में 22 लाख 63 हजार 341 व्यक्तियों की समग्र ई-केवायसी का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें अब तक 9 लाख 99 हजार 27 के-वायसी का सत्यापन किया जा चुका है।

उप मुख्यमंत्री ने किये मां शारदा देवी के दर्शन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने मैहर जिले के प्रवास के दौरान शुक्र वार को मां शारदा देवी के सपरिवार दर्शन कर पूजा अर्चना की। इस दौरान उप मुख्यमंत्री ने चैत्र नवरात्रि में मां शारदा देवी की पूजा अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि की कामना की। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने मां शारदा देवी दर्शन के पश्चात आल्हा मंदिर पहुंच कर आल्हा जी के दर्शन कर नक्षत्र वाटिका एवं आल्हा तलइया का निरीक्षण भी किया। इस दौरान मैहर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, एसडीम विकास सिंह सहित जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आदर्श नगर में आयोजित हुआ जागरूकता कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगर पालिक निगम सतना के तत्वावधान में आदर्श नगर में जागरूकता कार्यक्रम इंजीज़्धर्मेंद्र सिंह परिहार द्वारा आयोजित किया गया!कार्यक्रम में स्वच्छता जागरूकता संबंधी विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा हुई, विशेष रूप से सभी से सतना में अपने-अपने मोहल्ले में कचरे की मात्रा को चार हिस्से में बांटकर गीला कचरा अलग,सूखा कचरा अलग, घरेलू हानिकारक अलग एवं सेनेटरी नैपकीन डायपर अलग करके कचरा सिर्फ कचरा मांगने वाली गाड़ी को ही देने का अनुरोध किया गया! कार्यक्रम में लक्ष्मण सोनी, सुधा समुन्द्रे, कुंजीलाल प्रजापति ,आकांक्षा रजक, वैदेही रजक,नंदकिशोर, प्रियंका प्रजापति अनेक छात्र-छात्राओं एवं मोहल्ले के कई विद्वान और विदुषी जागरूक लोगों ने भाग लिया! कार्यक्रम के अंत में सभी ने स्वच्छता शपथ ली ! कार्यक्रम में स्वच्छता जागरूकता के साथ-साथ जल संरक्षण,मतदाता जागरूकता संबंधी,नशा मुक्त समाज,भ्रष्टाचार मुक्त समाज एवं अपराध मुक्त समाज के विषय पर भी हवाई पट्टी के बगल के आदर्श नगर मोहल्ले में इंजीज़्धर्मेंद्र सिंह ने चर्चा की!

कचरा संग्रहण की व्यवस्था से गांवों की बदलती तस्वीर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में निकलने वाले कचरे के समुचित प्रबंधन एवं निष्पादन हेतु जिले में गांव-गांव में नाडेप एवं कचरा संग्रहण केन्द्र का निर्माण कर एक ओर जहां गांवों को कचरा मुक्त स्वच्छ गांव का स्वरूप देने का प्रयास किया जा रहा हैं वहीं दूसरी ओर घरों से निकलने वाले कचरे का सही निस्तारण कर कचरे से कंचन, अर्थात कचरे को आमदनी का जरिया बनाया जा रहा है।

लेक्टर प्रतिभा पाल एवं सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर के निर्देशन में जिले की पडरी, बडी हर्राई, जनकहाई, भनिगवां, बीरपुर, महसांव, बजरंगपुर, नौबस्ता, बरहुला सहित कई गांवों में कचरा संग्रहण का कार्य किया जा रहा है। गांवों में कचरा संग्रहण का कार्य स्वसहायता समूहों के माध्यम से कराया जा रहा है। समूह एवं ग्राम पंचायत के मध्य अनुबंध निष्पादित कर कचरा संग्रहण के कार्य को मूर्त रूप दिया गया है। ग्राम पंचायत द्वारा चिन्हित समूह को साइकल रिक्शा अथवा कचरा गाडी उपलब्ध कराई गई है जिसके माध्यम से समूह की महिलाएं डोर-टू-डोर कचरा संग्रह करती हैं। गांव से एकत्र होने वाले कचरे को समूह द्वारा कचरा पृथक करण केन्द्र में ले जाया जाता है तदुपरांत वहां कचरे को अलग अलग किया जाता है इसके बाद उस कचरे को कबाडी को बेच दिया जाता है। इस कार्य से समूह की महिलाओं की आय में भी बढोतरी हुई है। समूह की महिलाओं द्वारा कचरा संग्रहण के साथ-साथ घरों से स्वच्छता कर वसूलने का कार्य भी किया जा रहा है ताकि ग्राम पंचायत स्वच्छता संबंधी कार्यों के लिये आत्म निर्भर रह सके। ग्रामीण अंचल में लोग अपने गांव को साफ सुथरा करने के लिये आगे आ रहे हैं साथ ही इनसे प्रेरणा लेकर अन्य गांव के लोग भी स्वच्छता में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सप्त दिवसीय शिविर का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत आयोजित सप्त दिवसीय विशेष शिविर का समापन समारोह आज उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर का आयोजन पेंटियम पॉइंट टेक्निकल कॉलेज करहिया द्वारा गोद ग्राम हरदी में किया गया था, जिसमें स्वयंसेवकों ने विविध सामाजिक गतिविधियों में भाग लेकर समाज सेवा का संदेश दिया।शिविर के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों जैसे स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, नशा मुक्ति रैली, योग प्रशिक्षण, और ग्रामवासियों के लिए स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। स्वयंसेवकों ने ग्रामीणों से संवाद स्थापित कर उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी भी दी।सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती तथा स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा में दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।मुख्य अतिथि के रूप मेंअवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के कुलगुरु डॉ. राजेंद्र कुमार कोड़रिया,अध्यक्षता अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुरेंद्र सिंह परिहार,विशिष्ट अतिथि के रूप में महाविद्यालय के मुख्य प्रबंध संचालक बी एन त्रिपाठी,डॉ.सी एम तिवारी सहायक प्राध्यापक भौतिकी विभाग,डॉ अनुराग मिश्रा सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, एसके त्रिपाठी शैक्षणिक संचालक, डॉ. सीमा शुक्ला प्राचार्या पेंटियम प्वाइंट टेक्निकल कॉलेज,डॉ.मोना तिवारी प्राचार्या पेंटियम प्वाइंट कॉलेज ऑफ़ मैनेजमेंट मुख्य रूप से उपस्थित रही।समापन समारोह में मुख्य अतिथि ने स्वयंसेवकों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि "राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। इस तरह के शिविर युवाओं में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक संवेदनशीलता और राष्ट्रीय चेतना को विकसित करते हैं।"कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अध्यक्ष ने कहा कि युवा राष्ट्र का भविष्य है। उनमें राष्ट्र की दशा एवं दिशा बदलने की अद्भूत क्षमता होती है।इस शिविर के माध्यम से आप लोगों ने जो शिक्षा और सेवा प्रदान करने की प्रेरणा ली है,उन्हें अपने जीवन भर न भूले और उनका सदुपयोग करें। इस अवसर पर अध्यक्षता कर रहे कुलसचिव ने कहा कि युवा राष्ट्र का भविष्य है। उनमें राष्ट्र की दशा एवं दिशा बदलने की अद्भूत क्षमता होती है।शिविर के माध्यम से आप लोगों ने जो शिक्षा और सेवा प्रदान करने की प्रेरणा ली है,उन्हें अपने जीवन भर न भूले और उनका सदुपयोग करें।कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय के मुख्य प्रबंध संचालक ने कार्यक्रम के सभी अतिथियों एवं स्वयंसेवकों का आभार व्यक्त किया और उन्हें भविष्य में भी समाज सेवा के लिए प्रेरित रहने का संदेश दिया।स्वयंसेवकों से अपेक्षा जताई कि शिविर में सीखे गए अनुशासन का लाभ परिवार, समाज और राष्ट्र को मिले।

राजरानी सेवा संस्थान में हुआ वर्ल्ड ऑटिज्म डे जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राजरानी सेवा संस्थान दिशा एवं विकास डे केयर केंद्र एवं सम राज सिंह कान्वेंट एवं समावेशी विद्यालय में वर्ल्ड ऑटिज्म डे (विश्व स्वलीनता दिवस)कार्यक्रम का बृहद रूप से आयोजन किया गया जिसमें सभी ऑटिज्म सिंड्रोम ग्रस्त दिव्यांग छात्र छात्रों एवं उनके अभिभावकों को आमंत्रित किया गया कार्यक्रम का उद्देश्य ऑटिज्म बीमारी के विषय में जन जागरूकता का प्रसार करना था कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की पूजा अर्चना से की गई इसके पश्चात विषय विशेषज्ञ एवं क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट श्रीमती दमयंती दुबे डॉक्टर फिजियोथैरेपिस्ट दिलीप दीपंकर द्वारा जानकारी दी गई की ऑटिज्म कोई बीमारी नहीं है इसका मतलब यह है कि आपका दिमाग दूसरे लोगों से अलग तरीके से काम करता है यह एक ऐसी बीमारी है जिसके साथ आप जन्म से ही पीड़ित होते हैं इस बीमारी का सामना धैर्य पूर्वक एवं मनोचिकित्सकों के उपचार द्वारा ही संभव होता है कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण संचालनालय विभाग भोपाल मध्य प्रदेश से श्री आरबी सेमिल सामाजिक न्याय विभाग रीवा श्रीमती प्रज्ञा भारती तिवारी समग्र अधिकारीएवं श्री राकेश मिश्रा शासकीय मूक बधिर विद्यालय संस्थापिका श्रीमती रानी सिंह अध्यक्ष अजय सिंह सचिव श्री संजय सिंह , प्राचार्या श्रीमती अनीता विश्वकर्मा,संचालिका दीप्ति सिंह परिहार विशेष उपाध्यक्ष आरती पटेल स्पेशल एजुकेटर वैशाली श्रीवास्तव शिक्षिकाएं श्रीमती नीता रजक पूनम मिश्रा साधना पांडे रंजना सिंह, कीर्ति शुक्ला मधु शुक्ला वर्षा साहू प्रगति साहू कोमल चर्मकार पूजा वर्मा करुणा केदार कुशवाहा सुभाष पटेल अंकित ललिता तरन्नुम निशा निर्मल सिंह राजेश सिंह युवराज सिंह तिलक राज सिंह सभी दिव्यांग छात्र-छात्राएं अभिभावक एवं अन्यजन उपस्थित रहे संयुक्त संचालक मध्य प्रदेश भोपाल श्री आर बी सेमल ने संस्था का निरीक्षण किया एवं यहां की व्यवस्थाओं की प्रशंसा की सभी दिव्यांग बच्चों का एवं उनके माता-पिता का उत्साह वर्धन कर संस्था के उज्जवल भविष्य की कामना की माननीय सेमल जी ने बताया कि दिव्या बच्चों को सहानुभूति एवं प्रेम की अति आवश्यक ता पड़ती है श्री राकेश मिश्रा द्वारा बताया गया कि इन्हें इन बच्चों को अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है ताकि इन बच्चों का विकास अच्छे तरीके से हो सके श्रीमती प्रज्ञा भारती तिवारी जी का कहना था की इन बच्चों को खुश रखने की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है।

प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड ने सीएसआर एक्सीलेंस कैटेगरी में जीता इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड - 2025

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड को कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए इंडस्ट्री एक्सीलेंस अवार्ड 2025 से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय डॉ. मोहन यादव द्वारा प्रदान किया गया। प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड़ की ओर से रजनीश सचेती, ग्रुप प्रेसीडेंट, लीगल एंड इनडायरेक्ट टैक्सेस, मनीष कुमार सिन्हा, सीनियर वाइस प्रेसीडेंट, एचआरएम एंड कार्पोरेट अफेयर्स, देवेन्द्र मिश्रा एजीएम सीएसआर एंड पीआर एवं विनय उरमलिया मैनेजर पीआर ने दिनॉक 02.04.2025 को होटेल कोर्टयार्ड मैरियट, भोपाल में आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में प्राप्त किया। इस भव्य पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दैनिक भास्कर ग्रुप द्वारा किया गया था।

यह सम्मान कंपनी द्वारा वर्ष 2024-25 में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास और अन्य सामाजिक कल्याणकारी कार्यों में किए गए महत्वपूर्ण योगदान एवं समाज-सेवा की प्रतिबद्धता और सतत विकास के प्रयासों के लिये प्रदान किया गया।

प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त करने पर कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर विजय अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ राकेश जैन, प्रेसीडेंट एंड प्लांट हेड टेक्निकल मनीष सिंह एवं अन्य वरिष्ट अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड लंबे समय से समाज के उत्थान के लिए कार्यरत है। कंपनी ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर बढ़ाने, स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने, हरित पर्यावरण लागू करने, और विभिन्न सामाजिक योजनाओं को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

नजूल निर्वतन समिति की बैठक 11 को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। संभागीय नजूल भूमि निर्वतन समिति की बैठक 11 अप्रैल को कमिश्नर कार्यालय सभागार में प्रातः 11.30 बजे से आयोजित की गई है। बैठक की अध्यक्षता कमिश्नर बीएस जामोद करेंगे। बैठक में सिंगरौली जिले के प्रस्तावों पर विचार किया जाएगा। समिति के सभी सदस्यों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

नाम सुधार सूचना

मैं बृजेश कुमार तिवारी पिता त्रिवेणी प्रसाद तिवारी, वार्ड क्रमांक-15, समान, तहसील-हुजूर, जिला रीवा म.प्र. का निवासी हूँ। मेरे आधार कार्ड नम्बर 5727 3909 6363 में मेरा नाम बृजेश तिवारी लिखा हुआ था। जबकि मेरी अंकसूची सहित सभी शासकीय रिकार्ड एवं सभी दस्तावेजों मे मेरा नाम बृजेश कुमार तिवारी लिखा है, जो कि सही है। मैने अपने आधार कार्ड में भी शपथ पत्र के साथ अपने नाम बृजेश तिवारी के स्थान पर सुधार कराते हुये बृजेश कुमार तिवारी करा लिया है। अतः मुझे बृजेश कुमार तिवारी के नाम से जाना जाये और मेरे सभी दस्तावेजों में मेरा नाम बृजेश कुमार तिवारी लिखा व पढ़ा जाये।

सूचनादाता
बृजेश कुमार तिवारी

विचार

स्वास्थ्य बीमा से वंचित 82 प्रतिशत दिव्यांगों को 'आयुष्मान भारत' के साथ जोड़ने की जरूरत

भारत सरकार की आयुष्मान भारत योजना को चलाने वाली नैशनल हैल्थ अथॉरिटी की वैबसाइट पर देश में 76,54,49,221 आयुष्मान हैल्थ कार्ड बनाने का दावा किया गया है। इनमें से 52,08,653 लोगों का हैल्थ डाटा भी इन कार्ड्स के साथ लिंक करने की बात कही गई है। सरकार का दावा है कि इस योजना से करोड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। लेकिन इतनी बड़ी योजना देश में लागू होने के बावजूद एक ऐसा वर्ग इस योजना का फायदा लेने से चूक रहा है जो शारीरिक तौर पर सक्षम नहीं है। 'राष्ट्रीय दिव्यांगता नैटवर्क' द्वारा हाल ही में पेश की गई 'नैशनल सैंटर फॉर प्रमोशन ऑफ एम्प्लॉयमैंट फॉर डिसेबल्ड पीपुल' (एन.सी.पी.ई.डी.पी.) की एक सर्वे रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है कि 82 प्रतिशत दिव्यांगों के पास किसी प्रकार का कोई सेहत बीमा नहीं है और 42 प्रतिशत दिव्यांगों को सरकार की आयुष्मान भारत योजना की जानकारी ही नहीं है। इस सर्वे में 34 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 5,000 से अधिक दिव्यांग व्यक्तियों की राय ली गई है। सर्वे के आंकड़ों के मुताबिक सिर्फ 28 प्रतिशत दिव्यांगों ने ही आयुष्मान भारत की योजना का लाभ लेने की कोशिश की। एन.सी.पी.ई.डी.पी. के कार्यकारी निदेशक 'अरमान अली' ने कहा कि सर्वे की संख्या महज आंकड़े नहीं हैं बल्कि उन लोगों की हालत दर्शाती है जो आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल से वंचित रह गए हैं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य बीमा दिव्यांग व्यक्तियों के लिए विशेषाधिकार ही नहीं, यह जीवन-यापन के लिए एक आवश्यकता है और दिल्ली हाई कोर्ट ने अपने एक ऐतिहासिक फैसले में दिव्यांगों के इस अधिकार की रक्षा करने वाला फैसला भी सुनाया था। दिल्ली हाई कोर्ट की जस्टिस 'प्रतिभा सिंह' ने 'सौरभ शुक्ला' बनाम 'मैक्स बूपा हैल्थ लाइफ इंश्योरैंस' और अन्य के मध्य चले एक मामले की सुनवाई के दौरान 13 दिसम्बर, 2022 को सुनाए गए अपने फैसले में कहा था कि जब हम जीवन के अधिकार की बात करते हैं तो उसमें स्वास्थ्य का अधिकार भी शामिल होता है। अदालत ने अपने फैसले के दौरान 'इंश्योरैंस रैगुलेटरी अथॉरिटी आफ इण्डिया' (आई.आर.डी.ए.) को आदेश दिया था कि वह सभी इंश्योरैंस कम्पनियों की एक बैठक करके उन्हें दिव्यांगों के लिए स्वास्थ्य बीमा की योजनाएं जारी करने का आदेश दे लेकिन अदालत के इस फैसले के बावजूद 3 साल तक इस दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं हुआ है। दिव्यांगों के बीच अपने स्वास्थ्य अधिकारों को लेकर जागरूकता की कमी का भी बीमा कम्पनियां फायदा उठा रही हैं और उन्हें हैल्थ इंश्योरैंस जैसे स्वास्थ्य के मौलिक अधिकार से वंचित रखा जा रहा है। 'अरमान अली' ने सरकार के मानदंडों पर भी सवाल उठाया और कहा कि आयुष्मान भारत 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को लाभान्वित करता है, लेकिन दिव्यांग व्यक्तियों के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं है।

'दोपहिया वाहन के साथ देने पड़ेंगे दो हैल्मेट' 'लेकिन सती से इसे लागू करना होगा'

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री 'नितिन गडकरी' देश के उन चंद नेताओं में से एक हैं जो न सिर्फ स्वच्छ राजनीति के पैरोकार हैं बल्कि अपने विभाग के काम को भी संजीदगी से लेते हैं। देश में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में कार चालकों की जान बचाने के लिए 2023 में उन्होंने स्वदेशी कार क्रैश टैस्ट प्रोग्राम 'भारत न्यू कार असैसमैंट प्रोग्राम' (भारत एन कैप) लांच किया था, जिसके परिणामस्वरूप भारत अब अमरीका, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया के बाद इस तरह का 'कार क्रैश टैस्ट प्रोग्राम' लागू करने वाला दुनिया का पांचवां देश बन चुका है। इसके अंतर्गत कार निर्माताओं को कार की मजबूती की जांच करने के लिए कार का 'क्रैश टैस्ट' करवाना अनिवार्य है। कारों के 'क्रैश टैस्ट' के बाद 'भारतीय वाहन निरीक्षण और प्रमाणन एजैंसी' (ए.आई.ए.सी.टी.) तथा भारत सरकार का सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय कार की मजबूती के आधार पर उसे 'सिंगल स्टार' से 'फाइव स्टार' तक की रैंकिंग देते हैं।

इस रैंकिंग से ग्राहकों को कार खरीदते समय उसकी मजबूती की पूरी जानकारी हासिल होती है। इस प्रोग्राम से पूरे भारत में कार चालकों की सड़क दुर्घटनाओं से संबंधित मौतों और घायलों की संख्या कम होने की उम्मीद है। अब 'नितिन गडकरी' ने सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वाले दोपहिया वाहन चालकों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए दोपहिया वाहन के साथ खरीदार को अनिवार्य रूप से 'आई.एस.आई. मार्क' वाले दो हैल्मेट देने की नीति की घोषणा की है। दिल्ली में आयोजित एक 'ऑटो सम्मिट' में उन्होंने कहा कि इस नीति का उद्देश्य दोपहिया वाहन चालकों और उनके सहयात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। 'टू व्हीलर हैल्मेट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन' (टी.एच.एम.ए.) के अध्यक्ष 'राजीव कपूर' ने 'नितिन गडकरी' की इस घोषणा का स्वागत करते हुए कहा है कि यह नियम मौजूदा समय में देश की आवश्यकता है। उन्होंने 'नितिन गडकरी' की इस पहल को सड़क सुरक्षा में मील का पत्थर बताते हुए कहा कि यह कदम भारत में सुरक्षित और समझदारी भरी दोपहिया यात्रा के नए युग की शुरुआत करेगा। 'श्री राजीव कपूर' ने कहा कि वाहन चालक और सहयात्री यदि हैल्मेट पहन कर यात्रा करेंगे तो इससे उनमें सुरक्षा के साथ-साथ जिम्मेदारी का भाव भी आएगा। हैल्मेट निर्माताओं द्वारा देश भर में ऐसे उच्च सुरक्षा मानकों वाले हैल्मेट की आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। दोपहिया वाहन चालकों द्वारा हैल्मेट न पहनने के अलावा वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात करना भी सड़क दुर्घटनाओं के एक बड़े कारण के रूप में सामने आ रहा है। हालांकि, इस तरह की लापरवाही के लिए वाहन चालक का चालान काटने का कानूनी प्रावधान है लेकिन पुलिस कर्मियों की संख्या कम होने के कारण इस तरह की लापरवाही भी नहीं रुक रही। सड़क दुर्घटनाएं रोकने के लिए इस तरह के कानूनी अपराध पर भी सख्ती की जरूरत है। सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के मामले में भारत का दुनिया में पहला स्थान है। 2022 में भारत में कुल 4.61 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 1.68 लाख लोगों की मौत हुई। इनमें से 50,000 से ज्यादा मौतें बिना हैल्मेट के दोपहिया वाहन चालकों की थीं जिनमें 18 से 45 वर्ष के बीच की उम्र के 35,692 दोपहिया वाहन चालक और 14,337 सहयात्री शामिल थे। उसी वर्ष बिना हैल्मेट दोपहिया वाहन चला रहे कुल 1,01,891 चालक और उनके सहयात्री घायल भी हुए थे। घायल होने वालों में 63,584 चालक और 38,307 सहयात्री शामिल थे। इसी प्रकार 2023 में भी भारत में हुई कुल 4.80 लाख सड़क दुर्घटनाओं में 1.72 लाख लोगों की मौत हुई। बिना हैल्मेट के दोपहिया वाहन चालकों की दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को रोकने की नीति में पिछले दो महीनों में यह दूसरा बड़ा प्रयास है। जनवरी महीने में ही उत्तर प्रदेश सरकार ने बिना हैल्मेट के दोपहिया वाहन चालकों को पैट्रोल न देने की नीति लागू की थी। 'नितिन गडकरी' का यह प्रयास अपने आप में सराहनीय है लेकिन राष्ट्र स्तर पर इसे उत्तर प्रदेश सरकार की तरह सख्ती से लागू करने की जरूरत है, ताकि बिना हैल्मेट के दोपहिया वाहन चालकों की होने वाली मौतों को रोकना सुनिश्चित किया जा सके।

बुलडोजर न्याय-न्यायिक व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंता

तापमान बढ़ने के साथ राजनीतिक भारत में भी गर्मी बढ़ रही है और इसका कारण अभूतपूर्व बुलडोजर राजनीति है। इस भारी भरकम मशीन ने गौरव प्राप्त कर लिया है क्योंकि भाजपा ने बुलडोजर की शक्ति को न केवल एक निर्जीव मशीन की शक्ति के रूप में, अपितु एक राष्ट्रवादी राजनीति के विचार के रूप में प्रस्तुत किया है और यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि यह एक सुदृढ़, निर्णायक, अच्छे और प्रभावी शासन का अंग है और इस तरह उसने कानून के शासन को कानून द्वारा शासन में बदल दिया है। इस भारी भरकम बुलडोजर को राजनीतिक चर्चा में लाने का श्रेय उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी बनाम बुलडोजर बाबा को जाता है और वर्ष 2017 से वहां सांप्रदायिक दंगाइयों और अपराधियों के विरुद्ध इसका उपयोग किया जा रहा है। अल्पसंख्यक समुदायों के घरों को तोड़ने में इसकी सफलता के चलते अन्य भाजपा शासित राज्यों में भी इसका समर्थन होने लगा है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री खट्टर को क्रमशः बुलडोजर मामा और बुलडोजर ताऊ के रूप में जाना जाता है। उसके बाद दिल्ली, असम, गुजरात, उत्तराखंड, महाराष्ट्र और पंजाब ने भी राज्य प्रतिकार के रूप में बुलडोजर मॉडल को अपना लिया है। इसका कारण क्या है? मुंबई और नागपुर में सांप्रदायिक झड़पों के बाद मुस्लिमों के स्वामित्व वाली संपत्तियों को तोड़ा गया। पटियाला, लुधियाना, मोहाली में तस्कर मादक द्रव्यों को बेचकर घर बना रहे हैं। यही नहीं, विपक्ष शासित राज्यों में भी ध्रुवीकरण बढ़ गया है। कांग्रेस शासित हिमाचल के शिमला के संजोली में एक मस्जिद को गिराया गया और इसी तरह कर्नाटक के हुबली में दंगाइयों के घरों को तोड़ा गया।

वर्ष 2022-23 में बुलडोजर द्वारा 1,53,820 और वर्ष 2024 में 7,407 घर गिराए गए और इनमें सबसे अधिक संख्या उत्तर प्रदेश में है। उसके बाद दिल्ली, गुजरात और असम का स्थान आता है। गिराए गए घरों में 37 प्रतिशत घर मुसलमानों के हैं या मुस्लिम क्षेत्रों के हैं। इस बुलडोजर राजनीति ने एक बड़ा विवाद भी पैदा किया। विपक्ष इसे संविधान का किया जा रहा है। यहां पर लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का न केवल दमन किया जा रहा है, अपितु ऐसा करने के बाद उत्साह का वातावरण भी तैयार किया जा रहा है। ऐसे नारे लगाए जा रहे हैं कि देश की सुरक्षा में जो बनेगा रोड़ा, बुलडोजर बनेगा हथौड़ा।

प्रश्न उठता है कि क्या यह राजनीतिक बाहुबल और दादागिरी का प्रदर्शन है या यह कानूनी है और दंगाइयों के विरुद्ध एक प्रतिरोधक है। हमारी लोकतांत्रिक जागरूकता इतनी कमजोर बन गई है कि ऐसे उदाहरण मानदंड और सिद्धांत बनते जा रहे हैं और स्थापित कानूनी सिद्धांतों का इस भारी भरकम मशीन द्वारा उल्लंघन किया जा रहा है और यह एक राजनीतिक औजार बन रहा है जिसका उपयोग एक मजबूत नेता की छवि बनाने के लिए भी किया जा रहा है और इससे सामाजिक मतभेद भी बढ़ रहे हैं।

उच्चतम न्यायालय ने एक उल्लेखनीय निर्णय देकर बुलडोजर कार्रवाई पर अंकुश लगाने का प्रयास किया है। न्यायालय ने कहा कि कानून की उचित प्रक्रिया का उपयोग किए बिना कथित आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त होने के आधार पर किसी व्यक्ति की संपत्ति को गिराना असंवैधानिक है और यह नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्तों तथा मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। इसके लिए संबंधित व्यक्ति को 15 दिन का नोटिस देना होगा और उसकी बात सुननी होगी। किंतु विभिन्न राज्यों की सरकारें न्यायालय के निर्णय को नजरअंदाज कर रही हैं। इससे न्यायिक व्यवस्था के बारे में गंभीर चिंता पैदा होती है। इससे भी अधिक ड्क्षचता की बात यह है कि कार्यपालिका न्यायालय के निर्णयों का पालन करने में विफल रही है। इससे न केवल कानून का शासन कमजोर हो रहा है अपितु न्यायालय की अवमानना के लिए एक खतरनाक पूर्वोदाहरण स्थापित हो रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि न्याय के इस स्वरूप में न तो उचित प्रक्रिया के लिए सम्मान है और न ही समय। इस संस्थागत कदम से न केवल कानून के शासन को खतरा पैदा हो रहा है अपितु इसके अंतर्गत दमनकारी नीतियों को भी अपनाया जा रहा है जो लोकतांत्रिक मूल्यों और नागरिक स्वतंत्रता के विरुद्ध है।

ट्रंप के डर से होगी हमारे किसान की लिंचिंग?

मोदी राज में किसान की यही नियति बन गई है। एक मुसीबत से जान छूटी तो दूसरी तैयार। ऐतिहासिक किसान आंदोलन ने तीन किसान विरोधी कानूनों को हराया। इधर किसान एम.एस.पी. हासिल करने के लिए लंबे संघर्ष की तैयारी में जुटे लेकिन उधर सरकार इन्हीं कानूनों को पिछले दरवाजे से लाने के लिए नैशनल फ्रेमवर्क ऑन एग्रीकल्चर मार्केटिंग का मसौदा लेकर खड़ी हो गई। किसान संगठनों के पुरजोर विरोध के चलते इस मोर्चे पर ब्रेक लगी। इतने में नई मुसीबत आन खड़ी हुई। अब भारत सरकार अमरीका के साथ एक बड़ा व्यापार समझौता करने जा रही है। इसकी गाज भारत के किसान पर पड़ेगी। अगर आने वाले कुछ महीनों में देश के किसान एकजुट होकर प्रतिरोध नहीं करते, तो किसान के भविष्य पर एक बार फिर संकट मंडरा सकता है।

25 से 29 मार्च तक ब्रैंडन लिंच के नेतृत्व में अमरीका के वाणिज्य विभाग का एक प्रतिनिधिमंडल भारत आया। एजैंडा था अमरीका और भारत के बीच एक द्विपक्षीय समझौते की रूपरेखा तैयार करना। भारत आकर लिंच ने अपने राष्ट्रपति ट्रम्प की तर्ज पर भारत के ही प्रधानमंत्री को आंखें दिखाईं। भारत सरकार ने चूं नहीं की। चार दिन की बातचीत को गुप्त रखा गया। आखिर में एक चिकना-चुपड़ा बयान जारी हो गया। लेकिन अंतरराष्ट्रीय व्यापार के जानकार बता रहे हैं कि भारत सरकार ने अमरीका के सामने घुटने टेक दिए हैं। अमरीका भारत की बांह मरोड़ रहा है कि रूस से सस्ता कच्चा तेल लेने की बजाय महंगे बाजार भाव पर अमरीका से कच्चा तेल खरीदे। भारत सरकार पहले ही अमरीका से प्राकृतिक गैस लेने की हामी भर चुकी है। भारत के वाणिज्य मंत्री देश के उद्योगपतियों से अपील कर रहे हैं कि वे अपनी जरूरत का माल चीन से खरीदने की बजाय अमरीका से खरीदें। दिन-रात राष्ट्रवाद की दुहाई देने वाली मोदी सरकार अमरीकी साम्राज्यवाद के सामने घुटने टेके बैठी है। इस प्रतिनिधिमंडल के अचानक भारत आने के पीछे की कहानी छुपी नहीं है। अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दुनिया भर में व्यापार युद्ध छेड़ दिया है। आज 2 अप्रैल से अमरीका ने दुनिया के हर देश पर जवाबी टैरिफ लगाने की घोषणा कर दी है। यानी जो देश अमरीका के आयात पर जितना शुल्क लगाता है, अमरीका भी उस पर उतना ही शुल्क लगाएगा। यही नहीं, जो देश अमरीका की विदेश नीति से सहमत नहीं होगा, उस पर विशेष शुल्क लगाया जाएगा। जब प्रधानमंत्री मोदी अमरीका गए तो उनके सामने ट्रम्प ने विशेष रूप से कहा कि भारत अमरीकी माल पर बहुत ज्यादा शुल्क लगाता है और अमरीका उसे ठीक करवाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ समय की मोहलत मांगी। कहा कि हम कुछ महीने के भीतर ही अमरीका से एक व्यापक समझौता करेंगे। फिर भी अमरीका ने 2 अप्रैल की जवाबी कार्रवाई

से भारत को मुक्त नहीं किया। साथ में इस प्रतिनिधिमंडल को भेजकर भारत सरकार पर दबाव बनाया है।

सवाल यह है कि ब्रैंडन लिंच के नेतृत्व वाले इस प्रतिनिधिमंडल के दबाव के चलते क्या भारत के किसान के हितों की लिंचिंग होगी? कृषि मामलों के जानकर और 'रूरल वॉइस' के संपादक हरवीर सिंह ने यह आशंका जताई है। उन्होंने याद दिलाया है कि हमारी सरकारों ने हमेशा अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों से कृषि क्षेत्र को बाहर रखा है। साथ ही सरकार को आगाह किया है कि इस वार्ता में कृषि उत्पाद को शामिल करने से भारत के किसान को नुकसान पहुंच सकता है। यह आशंका आधारहीन नहीं है। पिछले कई वर्षों से अमरीका की नजर भारत के कृषि उत्पाद बाजार पर रही है। कृषि विशेषज्ञ हरीश दामोदरन ने अमरीका के कृषि व्यापार का विश्लेषण कर बताया है कि पिछले कई साल से चीन ने अमरीकी कृषि उत्पाद की खरीद कम कर दी है और अब ब्राजील और अर्जेंटीना जैसे देशों से खरीदना शुरू कर दिया है। इसलिए अमरीका को नए बाजार की तलाश है, उसकी नजर भारत पर है।

अमरीका के कृषि मंत्रालय ने बाकायदा भारत के मांस उद्योग का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत में आने वाले दशक में चिकन फीड और पशुओं के लिए सोयाबीन और मक्का की मांग बढ़ेगी। यहां अमरीकी माल के खपत की अच्छी गुंजाइश है। अमरीका के लिए दिक्कत यह है कि भारत ने भारी आयात शुल्क लगा रखा है। साथ ही अमरीका की जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों के खतरे को देखते हुए इस पर पर भारत में पाबंदी है। अब ट्रम्प की दादागिरी के सहारे अमरीकी कृषि उत्पादक अपना माल भारत पर थोपने की कोशिश में हैं। कोशिश यह है कि अमरीका से होने वाले द्विपक्षीय समझौते में कुछ फसलों को भी शामिल कर लिया जाए। हर कोई जानता है कि ये फसलें कौन सी होंगी। सोयाबीन और मक्का के अलावा अमरीका की मुख्य दिलचस्पी कपास में होगी। साथ ही 'वॉशिंगटन सेब', अमरीकी नाशपाती और कैलिफोर्निया के बादाम जैसे कुछ उत्पाद भी होंगे। फिलहाल अमरीका को गेहूं और दूध उत्पाद भारत में बेचने की कम गुंजाइश दिखती है लेकिन भविष्य में यह भी इस सूची में शामिल हो सकते हैं। इस आयात की वकालत सिर्फ अमरीका ही नहीं, भारत की कुछ कंपनियां भी कर रही हैं। पोल्ट्री उद्योग, मांस निर्यातकों और कपड़ा मिलों के मालिक भी चाहते हैं कि उन्हें सस्ते दाम पर माल मिले और उनका मुनाफा बढ़े। अगर इसका किसी को नुकसान है तो भारत के किसान को। पहले ही किसान अपनी फसल के वाजिब दाम से वंचित रहता है। ऐसे में अगर अमरीका जैसे बड़े देश के साथ कृषि व्यापार खुल गया तो भारत का किसान दोहरी मार झेलेगा। पिछले कुछ साल में मक्का उत्पादन अपने परंपरागत क्षेत्रों के बढ़कर बिहार और बंगाल तक पहुंचा है।

मेयर पर बीजेपी पार्षदों ने उड़ेला पानी, बीरगांव निगम में बजट भाषण के दौरान प्रदर्शन; हंगामे के बीच 149 करोड़ का बजट पेश

मीडिया ऑडीटर,रायपुर (निप्र)। रायपुर के बीरगांव नगर निगम के सभाकक्ष में जमकर बवाल हुआ। बजट भाषण के दौरान भाजपा पार्षदों ने पानी से भरा कंटेनर महापौर पर ही उड़ेल दिया। ये पार्षद वार्ड में पानी नहीं मिलने पर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। हंगामे के बीच 149 करोड़ का बजट भी पेश किया गया।

सभाकक्ष में ही पानी गिराने के बाद दोनों पक्षों के पार्षदों की तरफ से नारेबाजी हुई। इस घटना के बाद महापौर ने भी आपत्ति जताई है। उनका कहना है कि भाजपा पार्षद मुद्दाविहीन हो गए हैं, उसी वजह से यह सब कर रहे हैं।

दरअसल, बीरगांव निगम में गुरुवार को कांग्रेस के महापौर नंदलाल देवांगन साल 2025-26 का बजट भाषण पढ़ रहे थे। निगम में सभापति समेत सभी दलों के पार्षद मौजूद थे। इस दौरान अचानक भाजपा पार्षद पानी का कंटेनर लेकर महापौर के सामने पहुंच गए। उन्होंने महापौर के खिलाफ नारेबाजी करनी शुरू कर दी। फिर पानी के कंटेनर को खोलकर महापौर पर पलट दिया।

इस प्रदर्शन को लेकर भाजपा पार्षदों का कहना है कि जनता की पानी जैसे मूलभूत आवश्यकता की मांगों को पूरा नहीं किया गया तो आगे और उग्र प्रदर्शन किया जाएगा।

इस प्रदर्शन को लेकर भाजपा पार्षदों का कहना है कि जनता की पानी जैसे मूलभूत आवश्यकता की मांगों को पूरा नहीं किया गया तो आगे और उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। पानी से महापौर के बजट भाषण की फाइलें और मेयर के कपड़े भीग गए। इसके बाद महापौर भी उठकर खड़े हो गए। इस दौरान भाजपा पार्षद जनता को पानी दो और महापौर मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे। इस प्रदर्शन का कांग्रेस के महापौर समेत अन्य पार्षदों ने विरोध किया। सदन के भीतर काफी देर तक हंगामे की स्थिति बनी रही। इस प्रदर्शन को लेकर भाजपा पार्षदों का कहना है कि बीरगांव नगर निगम के कई वार्डों में लोगों के घरों में पानी नहीं पहुंच रहा है। इस भीषण गर्मी में जनता को तकलीफ का सामना करना पड़ रहा है। जनता इसे लेकर लंबे समय से मांग कर रही है, लेकिन महापौर उनकी मांगों को पूरा नहीं कर रहे हैं। इस वजह से पानी के कंटेनर को लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया। मांगें पूरी नहीं हुई तो आगे और उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। हंगामे के बीच बीरगांव महापौर नंदलाल देवांगन ने 149 करोड़ का बजट पेश किया। इसमें अलग-अलग योजनाओं के लिए राशि मंजूर की गई है। जल आवर्धन योजना के लिए 10 करोड़ रुपए स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के लिए 20 करोड़ रुपए सिटी डेवलपमेंट प्लान के तहत नगर उत्थान योजना में 30 करोड़ का प्रावधान इसके अलावा निगम क्षेत्र के तालाबों के कायाकल्प के लिए भी राशि मंजूर की गई। निगम क्षेत्र के 6 गांव में मांस मछली के लिए अलग से बाजार का निर्माण करने का प्रस्ताव पास इस हरकत को मेयर नंदलाल देवांगन ने अमर्यादित बताया है। दैनिक भास्कर से उन्होंने कहा कि, बीजेपी पार्षदों के पानी डालने से बजट भाषण प्रभावित हुआ। इनके ऊपर कार्रवाई होनी चाहिए। साथ ही मेयर ने कहा कि, बीरगांव निगम क्षेत्र के 80 से 90% इलाकों में घरों में पानी पहुंचाने वाली योजनाएं पूरी हो चुकी है। कुछ अंदरूनी क्षेत्रों में पानी नहीं पहुंचा है जिसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

दुर्ग में दो म्यूल बैंक खाता धारक गिरफ्तार इनके अकाउंट में साइबर ठगी की रकम हुई ट्रांसफर

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (निप्र)। छत्तीसगढ़ की दुर्ग में साइबर अपराधों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करते हुए दो अलग-अलग मामलों में दो म्यूल बैंक खाता धारकों को गिरफ्तार किया है। साथ ही, अन्य मामलों में 35 आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की है। पुलिस की जांच में पता चला है कि दोनों आरोपियों के खाते में साइबर ठगी से प्राप्त राशि का लेन-देन हुआ था। दोनों आरोपी अब न्यायिक रिमांड पर है। दरअसल, 29 जनवरी 2025 को दुर्ग के रेंज साइबर थाना में अपराध दर्ज किया गया था, जिसमें भिलाई सुपेला के भारतीय स्टेट बैंक शाखा रामनगर के 11 बैंक अकाउंट होल्डर के खिलाफ जांच शुरू की गई थी। इन खातों में साइबर ठगी की रकम पाई गई थी। जांच के दौरान, पुलिस ने तीन म्यूल बैंक खाता धारकों को पहले गिरफ्तार किया और अब रितेश कुमार साहू (उम्र 24 साल) को गिरफ्तार किया है। जांच में पता चला कि रितेश कुमार साहू के बैंक अकाउंट में कर्नाटका के चिक्काबालापुरा से ऑनलाइन ठगी का पैसा आया था। इस खाते में कुल 89,300 रुपये की ठगी की राशि 11 बार ट्रांजैक्ट की गई थी। पुलिस ने जांच की और आरोपी के खिलाफ सबूत मिलने के बाद 3 अप्रैल 2025 को उसे गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया।

दूसरी ओर, थाना मोहन नगर पुलिस और एसीसीयू दुर्ग की संयुक्त टीम ने म्यूल अकाउंट की जांच करके अब तक 35 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस मामले में फरार आरोपी रोहित कुमार बागडी (उम्र 32 साल) को भी गिरफ्तार किया गया है, जिसे न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है। थाना मोहन नगर क्षेत्र में कर्नाटका बैंक के 111 म्यूल खातों में साइबर ठगी से हासिल की गई कुल 86,33,247 रुपये का लेन-देन हुआ था। इन खातों का इस्तेमाल अवैध रूप से पैसा कमाने के लिए किया जा रहा था। पुलिस की जांच में पाया गया कि विभिन्न राज्यों से साइबर ठगी की रकम इन खातों में ट्रांसफर की जा रही थी।

पूर्व मंत्री भैयालाल राजवाड़े का बयान, बोले- संगठन में कोई पूछ-परख नही रहा; जिला अध्यक्ष ने उनसे दूरी बना ली है

मीडिया ऑडीटर, कोरिया(एजेंसी)। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री भैयालाल राजवाड़े ने पार्टी संगठन पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा जिलाध्यक्ष देवेंद्र तिवारी उनसे दूरी बना रहे हैं। संगठन में उनकी कोई पूछ-परख नहीं है।

राजवाड़े ने जिला पंचायत अध्यक्ष के चयन को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने बताया कि कांग्रेस से भाजपा में आए मोहित पैकरा को अध्यक्ष बनाया गया। उनके विरोध के बावजूद पैकरा को ही प्रत्याशी बनाया गया। राजवाड़े के अनुसार अध्यक्ष पद का पहला अधिकार सौभाग्यवती सिंह का था। उन्होंने पार्टी द्वारा सौभाग्यवती सिंह को निष्कासित करने पर भी असहमति जताई। राजवाड़े ने इस कार्रवाई को गलत बताया। सत्ता और संगठन के बीच खींचतान को लेकर उन्होंने अपनी नाराजगी खुलकर व्यक्त की है।

सरगुजा-बलरामपुर में रिश्वत लेते 2 पटवारी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रगुजा/बलरामपुर(निप्र)। सरगुजा एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम ने शुक्रवार को बलरामपुर जिले में एक पटवारी को 8 हजार रुपए रिश्वत लेते पकड़ा है। वहीं अंबिकापुर में भी एक पटवारी को 7 हजार घूस लेते रंगे हाथों पकड़ा है। बलरामपुर में पटवारी ने सीमांकन के लिए 10 हजार रुपए रिश्वत मांगी थी।

इसमें से 2 हजार रुपए एडवांस में दे दिया था, इसके बाद भी सीमांकन नहीं कर रहा था। सरगुजा में पटवारी ने सीमांकन और ऋण पुस्तिका देने के लिए 20 हजार रुपए मांगे थे। 7 हजार की किश्त लेते हुए एंटी करप्शन ब्यूर ने उसे पकड़ा है। जानकारी के मुताबिक, अंबिकापुर तहसील अंतर्गत लालमाटी के पटवारी नीरज वर्मा ने शिकायतकर्ता पवन पांडेय से सीमांकन और ऋण पुस्तिका की दूसरी प्रति देने के लिए 20 हजार रुपए की रिश्वत मांगी थी। पवन पांडेय ने 10 हजार रुपए की रिश्वत नीरज वर्मा को दी, लेकिन वह शेष 10 हजार रुपए लिए बिना सीमांकन करने और ऋण पुस्तिका देने तैयार नहीं हुआ।

पवन पांडेय ने इसकी शिकायत सरगुज ाएंटी करप्शन ब्यूरो से की। बातचीत में सौदा कुल 17 हजार रुपए में तय हुआ। शुक्रवार को योजना के अनुसार पवन पांडेय ने महुआ पारा स्थित पटवारी नीरज वर्मा के निवास पर उसे शेष रिश्वत की रकम 7 हजार रुपए दी।

रिश्वत की रकम पटवारी नीरज वर्मा ने सहयोगी करमू राम को देने कहा। जैसे ही करमू राम ने रिश्वत की रकम ली,एंटी करप्शन ब्यूरो के डीएसपी प्रमोद कुमार खेस की टीम ने पटवारी नीरज वर्मा और करमू खेस को पकड़ लिया। दोनों को एंटी करप्शन ब्यूरो ने हिरासत में ले लिया है। बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर तहसील क्षेत्र अंतर्गत परसडीहा निवासी शिकायतकर्ता राजेश पटेल ने अपनी भूमि का सीमांकन करने के लिए आवेदन किया था। सीमांकन का आदेश जनवरी माह में हो गया था। सीमांकन के लिए बरतीकला के पटवारी हेमंत कुजूर ने 10 हजार रुपए रिश्वत मांगी थी। राजेश पटेल ने दो हजार रुपए पटवारी को दिया था। राजेश पटेल ने रिश्वत मांगने की शिकायत सरगुजा एंटी करप्शन ब्यूरो से की थी। शिकायत की पुष्टि होने पर एंटी करप्शन ब्यूरो सरगुजा की टीम शुक्रवार को बरतीकला पहुंची। योजना के अनुसार राजेश पटेल ने जैसे ही पटवारी हेमंत कुजूर को रिश्वत की रकम 8 हजार रुपए दिए, एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम ने उसे पकड़ लिया।

छुट्टी पर आया जवान 28 दिनों से लापता, तलाश जारी

मीडिया ऑडीटर, बालोद(निप्र)। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में छुट्टी पर घर लौटा जवान पिछले 28 दिनों से लापता है। शेजसिंह मंडावी (25) अपने बीमार पिता के इलाज के लिए छुट्टी लेकर 2 फरवरी को घर आया था। लेकिन 6 मार्च को वह अचानक घर से निकला और फिर वापस नहीं लौटा। मामला रनचिराई थाना क्षेत्र के कलंगपुर गांव का है। शेजसिंह मंडावी कश्मीर के 48वीं बटालियन पर तैनात है। घर में वह अपना 3-4 फोन और डॉक्यूमेंट भी छोड़ दिया है और जाते समय स्पोर्टस ड्रेस पहनकर निकला था। बेटे के नहीं मिलने से घर वाले काफी परेशान है। बीमार पिता की हालत लगातार बिगड़ रही है और मां रो-रोकर अपने बेटे की सलामती की दुआ कर रही है। मां ने प्रशासन से कहा कि बेटे को ढूंढने में उनकी मदद करें। शेजसिंह मंडावी के चाचा दुर्गाप्रसाद ने बताया कि वो जब घर आया था तब पिता के इलाज के लिए हॉस्पिटल भी जाता था। 6 मार्च को घर से बोलकर निकला कि काम में वापस जा रहा हूं लेकिन गया नहीं। बाद में पता चला कि काम में पहुंचा ही नहीं। बाद में बहुत ढुंढे मिला नहीं। घर में ही अपना फोन और डॉक्यूमेंट छोड़ दिया है। शुरुआत में परिजनों को लगा कि उनका बेटा वापस कश्मीर चला गया है लेकिन सेना के जवानों ने परिवार वालों को सूचना दी कि शेजसिंह अभी तक काम पर नहीं लौटा है। इसके बाद परिजन परेशान होकर प्रशासन से मदद मांग रहे है।एएसपी मोनिका ठाकुर ने बताया कि पुलिस इस मामले में जांच कर रही है। सरहदी क्षेत्रों के थानों में भी संपर्क किया गया है। साथ ही अखबारों और चैनलों में भी इस्तिहार दिया गया है। फिलहाल तलाश जारी है।

झंडा फहराएं और सेल्फी सोशल मीडिया पर अपलोड करें

मीडिया ऑडीटर, गौरेला (एजेंसी)। बिलासपुर के भाजपा कार्यालय में गुरुवार को स्थापना दिवस और अंबेडकर जयंती मनाने को लेकर बैठक हुई। विधायक अमर अग्रवाल ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं की पार्टी है। हम सभी को पार्टी के निर्देशानुसार मिलजुल कर सभी कार्यक्रमों और आयोजनों को सफल बनाना है।

उन्होंने कहा कि अपने दायित्वों का निर्वहन बखूबी से निभाना और मंडल, बूथ स्तर तक सभी आयोजनों को सफल बनाना है।इस दौरान कार्यकर्ताओं को घर-घर झंडा फहराकर सेल्फी लेना है और उसे सोशल मीडिया में अपलोड करना है। इसी तरह 14 अप्रैल को भारत रत्न डॉ.भीमराव अंबेडकर की जयंती भी पार्टी की रूपरेखा के अनुसार मनाना है।उन्होंने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी के निर्देशानुसार 6 अप्रैल को स्थापना दिवस मनाया जाएगा। इस दौरान 6 अप्रैल से 12 अप्रैल तक अलग-अलग स्तर पर कार्यक्रम होगा। जिसमें 6 या 7 अप्रैल को प्रत्येक बूथ स्तर पर प्राथमिक सदस्यों को एकत्रित होकर पार्टी स्थापना दिवस मनाना है।

कार्यकर्ताओं को सम्मेलन सहित सभी आयोजनों को सफल बनाने कहा गया है। कार्यकर्ताओं को सम्मेलन सहित सभी आयोजनों को सफल बनाने कहा गया है। इसी प्रकार 8 अप्रैल और 9 अप्रैल को मंडल या विधानसभा स्तर पर सभी सक्रिय सदस्यों का सम्मेलन होगा, इसमें 3 वक्ता अपनी बात रखेंगे। इसमें बूथ से लेकर मंडल स्तर के कार्यकर्ताओं को शामिल करना है। इस दौरान 7 से 12 अप्रैल के बीच मंडल अध्यक्ष के स्तर से ऊपर के सभी भाजपा पदाधिकारियों ब्लॉक पंचायत सदस्यों और पार्षदों स्तर से ऊपर के सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को गांव-बस्ती चलो अभियान में भाग लेना है।

निगम महापौर और आयुक्त ने नगर भ्रमण कर जानी समस्याएं

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगर पालिक निगम के महापौर रामनरेश राय शुक्रवार को नगर निगम क्षेत्र के बड़ाबाजार वार्ड क्रमांक- 28 एवं 29 में सुबह का भ्रमण कर आमजनों से भेट-मुलाकात कर उनसे रूबरू हुए। महापौर राय ने नगर निगम टीम के साथ बड़ाबाजार के 02 वार्डो का डोर टू डोर भ्रमण कर स्थानीय नागरिकों की समस्याओं को सुना और उनके त्वरित निराकरण कराये जाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये। महापौर ने भ्रमण कर वार्ड की साफ-सफाई, गर्मी के मौसम को देखते हुए पेयजल आपूर्ति पूर्ण करने हेतु संबंधित को निर्देशित किया उन्होंनें स्थानीयजनों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना और संबंधित अधिकारियों को शीघ्र समस्या के समाधान सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किये। उन्होंने कहा की नगर निगम का मुख्य उद्देश्य नगर को स्वच्छ सुन्दर एवं सुव्यवस्थित बनाना है। इसी प्रकार राज्य सरकार के निर्देशानुसार नगर निगम के आयुक्त रामप्रसाद आचला ने भी शुक्रवार को नगर के कोरिया कॉलरी निर्माणाधीन सामुदायिक भवन का निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता का जायजा लिया व समय-सीमा के भीतर कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही आयुक्त ने कोरिया एवं गेल्हापानी के ठोस अपशिष्ट एवं प्रबंधन केन्द्र (एस.एल.आर.एम. सेन्टर) का निरीक्षण कर उपस्थित स्वच्छता दीदीयों से सेन्टर परिसर की आवश्यक गतिविधियां एवं डोर टू डोर कचरा क्लेक्शन के बारे में जानकारी लेकर उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन दिये। इस दौरान नगर निगम के एमआईसी सदस्य मनोज डे, नरेन्द्र साहू, पार्षद मनीश खटीक, जल शाखा के प्रहलाद पाठक, निगम के स्वच्छता टीम एवं स्थानीय नागरिकों की सहभागिता रही।

मनेन्द्रगढ़ में रेडक्रॉस सोसायटी की साधारण सभा की बैठक हुई

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले में भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी की जिला शाखा की साधारण सभा का आयोजन आज अमृत सदन, जनपद पंचायत मनेन्द्रगढ़ में किया गया। इस महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी डी. राहुल वेंकट ने की, जिसका मुख्य उद्देश्य 2025-2028 के कार्यकाल के लिए जिला प्रबंध समिति का गठन करना था। बैठक में चेयरमैन, वाइस चेयरमैन, कोषाध्यक्ष, आजीवन सदस्य और राज्य प्रबंध समिति के पदों पर निर्विरोध चयन किया गया।

इस अवसर पर रायपुर से श्री सत्यभान तिवारी और श्री चन्द्र कुमार पनका विशेष रूप से उपस्थित रहे। भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी की प्रबंध समिति में 6 शासकीय और 22 अशासकीय सदस्य निर्विरोध रूप से नव-निर्वाचित हुए। चेयरमैन पद पर शैलेष कुमार जैन, वाइस चेयरमैन पद पर विवेक कुमार जायसवाल, कोषाध्यक्ष पद पर रिंकेश खन्ना और राज्य प्रबंध समिति के प्रतिनिधि पद पर रामनरेश पटेल को निर्विरोध चुना गया। बैठक के दौरान सदस्यों ने अपने नए कार्यकाल में संस्था के मिशन और सामाजिक सेवाओं के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता व्यक्त की। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने सभी नव-निर्वाचित सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए संस्था के भविष्य के लिए दिशा-निर्देश तय किए। उन्होंने एमसीबी जिले में रेडक्रॉस सोसायटी से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने, सहायता राशि प्रदान करने तथा सभी सदस्यों के लिए एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाने का निर्देश दिया। कलेक्टर ने इस बात पर जोर दिया कि रेडक्रॉस सोसायटी के माध्यम से जिले के प्रत्येक जरूरतमंद तक सहायता पहुंचाई जाएगी और समाज सेवा में सभी की भागीदारी आवश्यक होगी। इस अवसर पर जिला चिकित्सा अधिकारी अविनाश खरे ने 7 अप्रैल 2025 को विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर मेगा रक्तदान शिविर आयोजित करने की घोषणा की और अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। साथ ही, अन्य सामाजिक कार्यों को बढ़ावा देने हेतु विशेष योजनाओं पर चर्चा की गई। नवनिर्वाचित चेयरमैन विवेक, शैलेष जैन ने कहा कि सभी सदस्य मिलकर जरूरतमंदों की सहायता के लिए कार्य करेंगे।

बैठक में एसडीएम लिंगराज सिदार, जिला चिकित्सा अधिकारी अविनाश खरे, जिला नोडल अधिकारी सोमेन्द्र मंडल, टी. विजय गोपाल राव (जिला संगठन रेडक्रॉस), जिला शिक्षा अधिकारी अजय मिश्रा, सीएमओ मुक्ता सिंह चौहान, जनपद सीईओ वैशाली सिंह, खाद्य अधिकारी जतिन देवांगन, पर्यटन नोडल अधिकारी डॉ. विनोद पांडे, सीएमओ झगराखांड बसंत राम, एलडीएम संजीव पाटिल, गोपाल सिंह, एसडीओ एनएच एम.एस. नागरे, डॉ. एस.के आचार्य, राज कुमार पाण्डेय, आनंद अग्रवाल, नरोत्तम शर्मा, नीरज कुमार अग्रवाल, राशिद अली, राजेश कुमार गोयल, इन्द्रजीत सिंह कालरा, प्रवीन निशी, जितेश कुमार चावड़ा, श्रीकांत सिंह, अजय जायसवाल, पियूष चावड़ा, देवेंद्र कुमार वर्मा, कृष्णा, पियूष अग्रवाल, आनंद जैन, जसपाल सिंह कालरा, आनंद जैन सहित कई अधिकारी, कर्मचारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

बिलासपुर नगर निगम का बजट इसी महीने होगा पेश

मीडिया ऑडीटर, बलासपुर (निप्र)। बिलासपुर नगर निगम का बजट इसी महीने सामान्य सभा में रखा जाएगा। बजट 1089 करोड़ का ?होगा। गुरुवार को स्त्र्ष्ट की बैठक में बजट को लेकर चर्चा की गई। जिसमें नालंदा परिसर बनाने और श्रद्धांजलि योजना की राशि को 3 हजार करने का प्रावधान शामिल है। साथ ही गर्मी में पानी की समस्या को देखते हुए शासन से डेढ़ करोड़ के बजाय 3 करोड़ की डिमांड भेजने का निर्णय लिया गया। सामान्य सभा की बैठक में सभी प्रस्तावों को रखा जाएगा।

नगर निगम के दृष्टि सभा कक्ष में स्त्र्ष्ट की बैठक हुई। बजट में 6 एजेंडे रखे गए, जिसे स्त्र्ष्ट में पास कर लिया गया है। बैठक में भाजपा की घोषणाओं को पूरा करने पर चर्चा की गई। जिसमें शहर सरकार में इन मुद्दों को शामिल करने का निर्णय लिया है। 1089 करोड़ का बजट पेश किया जाएगा, जो 2024 के बजट की तुलना में 38 करोड़ रुपए ज्यादा है। स्त्र्ष्ट ने श्रद्धांजलि योजना की राशि को बढ़ाकर अब 3 हजार करने का निर्णय लिया है। इस योजना के तहत अब तक मृतक के परिजनों को 2 हजार रुपए दिया जाता था। अब इसमें 1 हजार बढ़ाकर 3 हजार रुपए कर दिया गया है।गर्मी में पानी की समस्या को देखते हुए शासन से मिलने वाली डेढ़ करोड़ की राशि को बढ़ाकर अब 3 करोड़ करने इस्टीमेट बनाने का निर्देश निगम के जल शाखा के अधिकारियों को दिया गया है। इसके साथ ही कामकाजी महिलाओं और युवतियों के लिए पिंक टॉयलेट, स्कूल-कॉलेजों में मुफ्त वाई-फाई, स्मार्ट वेंडिंग जोन और फूड स्ट्रीट, स्कूल-कॉलेज की छात्राओं के लिए फ्री सेनेटरी पैड, नालंदा परिसर की तरह सार्वजनिक स्टडी सेंटर और छात्र-छात्राओं के लिए फ्री लाइब्रेरी के लिए बजट में प्रावधान किया गया है। मार्च 2024 में सामान्य सभा की बैठक में तत्कालीन मेयर रामशरण यादव ने 1051.94 करोड़ का बजट पेश किया था, जिसमें वार्डों में सामुदायिक भवन बनाने के लिए 4 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया था, लेकिन सालभर बाद भी शहर के एक भी वार्ड में सामुदायिक भवन नहीं बने।खेलों को बढ़ावा देने स्टे?डियम बनाने के लिए 50 एकड़ जगह फाइनल कर लिया गया है, लेकिन यह भी नहीं बना। 50 लाख में महिला आ?जीविका सेंटर बनाकर शहर की महिलाओं को फ्री में सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण दिया जाना था। यह भी बजट पुस्तिका में कैद होकर रह गया। 2024 के बजट में 1640 करोड़ रुपए सड़क-नाली, बिजली- पानी पर खर्च किए जाने का प्रावधान किया गया था, लेकिन आधारभूत, 14वें-15वें वित्त आयोग को मिलाकर भी निगम प्रशासन इतना खर्च नहीं कर सका। इस बजट में इसके लिए फंड का प्रावधान कर पूरा किया जाएगा।

वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचे ओवैसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा में चर्चा के दौरान कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि विपक्ष के सभी लोगों ने बिल को स्वीकार नहीं किया। इसका मतलब इसमें खामिया हैं। जिसकी लाठी उसकी भैंस ये हर वक्त ठीक नहीं। वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में दो याचिका लगाई गई। बिहार के किशनगंज से कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने यह याचिका लगाई है। बिल पर 2 और 3 अप्रैल को लोकसभा-राज्यसभा में 12-12 घंटे की चर्चा के बाद पास हुआ था। इसे अब राष्ट्रपति को भेजा जाएगा। उनकी सहमति के बाद यह कानून बन जाएगा। राज्यसभा से गुरुवार को बिल पास होने के बाद कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने कहा था कि कांग्रेस हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। तमिलनाडु की डीएमके ने भी याचिका लगाने की बात कही थी। प्रधानमंत्री मोदी ने वक्फ संशोधन बिल के पास होने को एक बड़ा सुधार बताया। उन्होंने शुक्रवार सुबह एक्स पर लिखा कि यह कानून ट्रांसपेरेंसी बढ़ाएगा और गरीब-पसमांदा मुस्लिमों के अधिकारों की रक्षा करेगा। उन्होंने कहा- वक्फ संपत्तियों में सालों से गड़बड़ी हो रही थी, जिससे खासतौर पर मुस्लिम महिलाओं और गरीबों को नुकसान हुआ। यह नया कानून इस समस्या को दूर करेगा।

बंगाल सिलेंडर ब्लास्ट, पटाखा फैक्ट्री मालिक का भाई गिरफ्तार

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के साउथ 24 परगना जिले के पाथर प्रतिमा इलाके में 31 मार्च की देर रात सिलेंडर में ब्लास्ट हुआ था। हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई थी। मामले में दूसरे आरोपी की गिरफ्तारी हुई है। यह मुख्य आरोपी और पटाखा फैक्ट्री मालिक का भाई है। इससे पहले 2 अप्रैल को मुख्य आरोपी चंद्रकांत बानिक को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। दोनों भाई घटना के बाद से ही फरार चल रहे थे। पुलिस अब दोनों भाईयों से मामले में पूछताछ कर रही है। इससे पहले 1 अप्रैल को पुलिस ने आधिकारिक बयान जारी करते हुए शुरुआती जांच में 2 गैस सिलेंडर में ब्लास्ट की जानकारी होने की बात कही थी। वहीं, भाजपा विधायक और विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने कहना था कि यहां क्रूड बम बनाने की अवैध फैक्ट्री चल रही थी। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और पुलिस प्रशासन घटना को दबाने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, एसपी कोटेश्वर राव ने कहा था कि घर में कोई अवैध पटाखा फैक्ट्री नहीं थी। टीएमसी विधायक समीर कुमार का घटना के बाद कहना था कि पीड़ित परिवार का घर से कुछ मीटर की दूरी पर लाइसेंसी पटाखा फैक्ट्री थी। हो सकता है कि घर में पटाखों का कच्चा माल रखा गया हो, जिससे यह हादसा हुआ हो।

मुख्यमंत्री का दतिया में शराबबंदी लागू करने पर हुआ भव्य नागरिक अभिनंदन

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वसुधैव कुटुंबकम के विचार वाली भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व को परिवार मानती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में इस सिद्धांत पर चल रही राज्य सरकार सभी के हित और कल्याण के लिए समर्पित है। परिवारों का वातावरण खराब न हो, मेहनत से कमाए गए पैसे का उपयोग परिवार के हित में हो, यह सुनिश्चित करने के लिए ही शराबबंदी लागू की गई है। धार्मिक नगरों में पवित्र भाव की अनुभूति होती है, अतः प्रदेश में विद्यमान 19 देव-स्थानों की गरिमा को बनाए रखने के लिए ही इन स्थानों पर शराबबंदी लागू की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव माँ पीताम्बरा की नगरी दतिया में शराबबंदी लागू करने के लिए आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में जन-प्रतिनिधियों और नागरिकों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का दतिया में शराबबंदी के लिये नागरिक अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया सहित प्रदेश में जहां-जहां देवी मां की कृपा है, वहां देवी लोक विकसित किए जाएंगे। चित्रकूट सहित भगवान श्रीराम से जुड़े प्रदेश के सभी स्थानों का श्रीराम वनपथ गमन मार्ग के अंतर्गत उन्नयन किया जा रहा है। इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण की जहां-जहां भी लीलाएं हुईं, उन स्थानों को भी तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए बजट में प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति के मूल भाव सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः के अनुरूप राज्य सरकार सबके कल्याण के लिए ही समर्पित भाव से काम कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। राज्य सरकार के लिए कृषकों का हित सर्वोपरि है, किसानों को उनकी मेहनत और उपज का सही दाम मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए ही 2600 रुपये प्रति क्विंटल की दर पर गेहूं खरीदा जा रहा है।

सोशल मीडिया पर बच्चों के बैन की याचिका खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को 13 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर कानूनी प्रतिबंध लगाने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई से इनकार कर दिया। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा- यह नीतिगत मामला है। आप संसद से कानून बनाने के लिए कहें। यह हमारे दायरे से बाहर है। हालांकि कोर्ट ने अन्य अथॉरिटी के सामने अपील करने की छूट दी है। पीठ ने कहा कि आठ सप्ताह के भीतर कानून के अनुसार अपील की जा सकती है।

वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ 8 राज्यों में प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल के संसद से पास होने के खिलाफ देश में विरोध प्रदर्शन हो रहा है। शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद पश्चिम बंगाल, गुजरात, बिहार, झारखंड, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, असम में मुस्लिमों ने सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किया। इसमें महिला-बच्चे भी शामिल हैं।

उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में पुलिस हाई अलर्ट पर है। फ्लैग मार्च जारी है। लखनऊ में दरगाहों और मस्जिदों की ड्रोन से निगरानी की जा रही है। यूपी अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशफाक सैफी को वक्फ संशोधन बिल का समर्थन करने पर जान से मारने की धमकी मिली। उनके बहनोई को पीटा गया।

गुजरात के अहमदाबाद में सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग सड़कों पर जुटे। उनके पोस्टर-बैनर पर वक्फ बिल

वापस लो, रिजेक्ट यूसीसी लिखा था। लोगों ने बांह पर काली पट्टे बांधी हुई थी। भीड़ ने तानाशाही नहीं चलेगी के नारे लगाए। पुलिस ने 50 लोगों को हिरासत में लिया।

पश्चिम बंगाल के कोलकाता में पार्क सर्कस क्रासिंग में हजारों लोग सड़कों पर जमा हुए।

यहां भी वक्फ बिल रिजेक्ट के बैनर-पोस्टर लिए लोग विरोध कर रहे हैं।

वक्फ बिल का विरोध, 7 मुस्लिम नेताओं ने जेडीयू छोड़ीं

पटना (एजेंसी)। जेडीयू ने वक्फ संशोधन बिल पर मोदी सरकार का समर्थन किया है। इसके बाद से सीएम नीतीश कुमार की पार्टी में घमासान मचा हुआ है। बगावत शुरू हो गई है। एक के बाद मुस्लिम नेताओं का इस्तीफा जारी है। अब तक बिल को समर्थन देने से नाराज 7 मुस्लिम नेताओं ने पार्टी छोड़ दी है। इनमें पूर्व प्रदेश सचिव एम. राजू नैयर, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव मोहम्मद शाहनवाज मलिक, बेतिया जिला के उपाध्यक्ष नदीम अख्तर, प्रदेश महासचिव सिएन मो. तबरेज सिद्दीकी अली, भोजपुर से पार्टी सदस्य मो. दिलशान राईन और खुद को मोतिहारी के ढाका विधानसभा सीट से पूर्व प्रत्याशी बताने वाले मोहम्मद कासिम अंसारी शामिल हैं।

नवादा जिले के जेडीयू जिला सचिव मोहम्मद फिरोज खान ने भी पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। फिरोज खान ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की दोहरी नीति का हवाला देते हुए यह कदम उठाया है।

मुस्लिम नेताओं ने वक्फ बिल के समर्थन पर नाराजगी जताते हुए कहा है कि पार्टी ने लाखों मुसलमानों का भरोसा तोड़ा है। हालांकि, पार्टी ने दावों को खारिज किया है।

भाजपा बोली- ममता बनर्जी को जेल भेजेंगे

कोलकाता (एजेंसी)। भाजपा ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले मामले में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के इस्तीफे और उन्हें जेल भेजने की मांग की। भाजपा ने सिलीगुड़ी में विरोध रैली निकाली। इस दौरान विधायक शंकर घोष ने कहा, हम ममता बनर्जी के इस्तीफे की मांग करते हैं। पूरे मंत्रिमंडल पर दर्ज किया जाना चाहिए। अधिकतर मंत्रियों पर पहले ही मामला दर्ज किया जा चुका है। वे जेल जा रहे हैं, तो फिर ममता पर क्यों नहीं। वहीं, केंद्रीय मंत्री और पश्चिम बंगाल

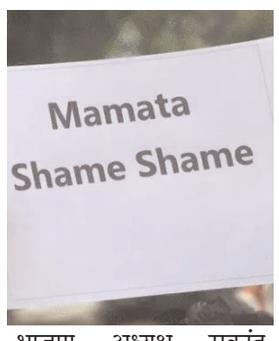

भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने दावा किया कि ममता बनर्जी शिक्षक भर्ती घोटाला मामले में जेल जाने वाली दूसरी मुख्यमंत्री होंगी। हरियाणा के चार बार मुख्यमंत्री रहे दिवंगत ओम प्रकाश चौटाला ऐसे ही एक मामले में 2013 में जेल गए थे। दरअसल, 3 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने स्कूल भर्ती घोटाले से जुड़े कोलकाता हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखा। हाईकोर्ट ने पश्चिम बंगाल स्कूल सर्विस कमीशन की 2016 में 25 हजार शिक्षकों और गैर-शिक्षकों की नियुक्ति को अवैध बताते हुए भर्ती रद्द कर दी थी। सुकांत बोले- भ्रष्टाचार में शामिल पूरे मंत्रिमंडल को जेल जाना चाहिए मजूमदार ने कहा- 26 हजार भर्ती में से करीब 20 हजार का चयन सही तरीके से हुआ।

राहुल गांधी को लखनऊ हाईकोर्ट से झटका,200 रुपए जुर्माना-समन रद्द करने की मांग खारिज

लखनऊ (एजेंसी)। राहुल गांधी की याचिका लखनऊ हाईकोर्ट ने खारिज कर दी है। उन्होंने वीर सावरकर मानहानि मामले में लखनऊ की सेशन कोर्ट के समन आदेश और 200 रुपए जुर्माने को लेकर हाईकोर्ट में 2 अप्रैल को चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने उन्हें अल्टरनेट रेमेडी (वैकल्पिक उपाय) अपनाने का सुझाव देते हुए लखनऊ सेशन कोर्ट जाने को कहा है। दरअसल, 3 मार्च को लखनऊ की अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट ने लगातार पेशी से गायब रहने पर राहुल गांधी पर 200 रुपए जुर्माना लगाया था। चेतावनी दी थी कि 14 अप्रैल 2025 को अदालत में हाजिर हों, अगर वे इस तारीख को भी पेश नहीं होते हैं तो कठोर कानूनी कार्रवाई हो सकती है। गैर-जमानती वारंट भी जारी किया जा सकता है। राहुल गांधी के वकील प्रांशु अग्रवाल ने बताया - 12 दिसंबर, 2024 को धारा 153ए और 505 आईपीसी के तहत लखनऊ की सेशन कोर्ट ने राहुल गांधी को समन जारी किया था। 3 मार्च को एसीजेएम ने भी 200 रुपए का जुर्माना लगाया था। इसके खिलाफ हम हाईकोर्ट गए थे, लेकिन कोर्ट ने हमारी मांग खारिज कर दी।

एक्टर-डायरेक्टर मनोज कुमार का 87 की उम्र में निधन

मुंबई (एजेंसी)। एक्टर मनोज कुमार का शुक्रवार सुबह मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में निधन हो गया। वे 87 साल के थे। वे विशेष रूप से अपनी देशभक्ति फिल्मों के लिए जाने जाते थे। उन्हें भारत कुमार के नाम से भी जाना जाता था। उपकार, पूरब-पश्चिम, क्रांति, रोटी-कपड़ा और मकान उनकी बेहद कामयाब फिल्में रहीं। मनोज कुमार के बेटे कुणाल गोस्वामी ने हड्ड को बताया, %उन्हें लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां थीं। यह

भगवान की कृपा है कि उन्हें आखिरी समय में ज्यादा परेशानी नहीं हुई, शांतिपूर्वक उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनका अंतिम संस्कार कल सुबह 11 बजे मुंबई के पवनहंस श्मशान घाट पर होगा। मनोज कुमार काफी समय से लिवर सिरोसिस से जूझ रहे थे। उनकी हालत बिगड़ने के बाद उन्हें 21 फरवरी 2025 को अस्पताल में भर्ती कराया गया था।मनोज कुमार को 7 फिल्म फेयर पुरस्कार मिले थे। पहला फिल्म फेयर 1968 में फिल्म उपकार के लिए मिला था। उपकार ने बेस्ट फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर, बेस्ट स्टोरी और बेस्ट डायलॉग के लिए चार फिल्म फेयर जीते। 1992 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 2016 में उन्हें दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड से नवाजा गया।

इलेक्टोरल बॉन्ड से जुड़ी याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को इलेक्टोरल बॉन्ड (चुनावी बॉन्ड) से जुड़ी याचिका खारिज कर दी। याचिका में कोर्ट से उसके पुराने फैसले की समीक्षा की मांग की गई थी। पुराने फैसले में कोर्ट ने राजनीतिक दलों को मिले 16,518 करोड़ रुपए जब्त करने की मांग खारिज की थी। चीफ जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने 2 अगस्त, 2024 के शीर्ष अदालत के फैसले के खिलाफ खेम सिंह भाटी द्वारा दायर समीक्षा याचिका को खारिज कर दिया। पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच जजों की संविधान पीठ ने 15 फरवरी, 2024 को चुनावी बॉन्ड योजना को रद्द कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद, भारतीय स्टेट बैंक ने चुनाव आयोग के साथ फंडिंग में मिले रुपयों का डेटा साझा किया था। चुनाव आयोग ने 14 मार्च, 2024 को इलेक्टोरल बॉन्ड का डेटा अपनी वेबसाइट पर जारी किया था।

17 राज्यों में आंधी, झारखंड में ओले गिरने का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने शुक्रवार के लिए बिहार, छत्तीसगढ़ समेत 17 राज्यों में आंधी और तेज हवा चलने का अलर्ट जारी किया है। झारखंड में ओले गिरने के साथ बारिश हो सकती है। इसके अलावा देश के दक्षिणी राज्यों में तेज बारिश की आशंका है। गुजरात में हीट वेव और उमस बनी रह सकती है। बीते दिन कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगाना के अलग-अलग इलाकों में बारिश हुई।

बारिश के बाद कर्नाटक के अधिकतम तापमान में 7.5ए तक की गिरावट देखी गई। इधर, राजस्थान में आंधी-बारिश देखने को मिली। हालांकि, बाड़मेर, जैसलमेर के इलाकों में गर्मी बढ़ने लगी है। तेलंगाना के यादाद्री-भुवनगिरी जिले में 97.8 एमएम बारिश हुई। वहीं, हैदराबाद में 91 एमएम हुई। इस वजह से चारमीनार के प्लास्टर का एक हिस्सा टूट गया।

कलकत्ता हाईकोर्ट ने हावड़ा में रामनवमी जुलूस की इजाजत दी

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाईकोर्ट ने हिंदू पक्ष को रामनवमी पर 6 अप्रैल को हावड़ा में तय रूट पर जुलूस निकालने की सशर्त इजाजत दे दी है। कोर्ट ने कहा है कि कोई भी व्यक्ति जुलूस में हथियार लेकर नहीं आएगा। पुलिस जुलूस की निगरानी करेगी। हाईकोर्ट के आदेश के बाद कोलकाता पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा ने फौरन आदेश जारी कर दिया। इसमें कहा गया कि रामनवमी के जुलूस में कोई भी हथियार लेकर नहीं निकलेगा। भाजपा के सियासी रूप से मजबूत गढ़ उत्तर बंगाल के एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि पहाड़ी जिलों में ज्यादा फोर्स लगाई गई है। रामनवमी को देखते हुए पश्चिम बंगाल सरकार ने भी 9 अप्रैल तक पुलिसकर्मियों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं। ष्टरूममता बनर्जी ने सभी समुदाय के लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील की है। दक्षिण बंगाल के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक सुप्रतिम सरकार ने बताया कि हमें रामनवमी की आड़ में अशांति फैलाने की साजिश का खुफिया इनपुट मिला है।

केंद्र ने तमिलनाडु के नीट से छूट संबंधी विधेयक को नामंजूर किया-मुख्यमंत्री स्टालिन

नई दिल्ली (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने शुक्रवार को कहा कि राज्य को नीट से छूट संबंधी विधानसभा से पारित किये गये प्रस्ताव को केंद्र ने नामंजूर कर दियाहै। इस प्रस्ताव को राज्य सरकार ने विधानसभा से पारित कराने के बाद राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा था। स्टालिन ने कहा कि राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) को समाप्त कराने को लेकर तमिलनाडु अपना संघर्ष जारी रखेगा। उन्होंने बताया कि इस संबंध में नौ अप्रैल को एक सर्वदलीय बैठक बुलाई गई है। मुख्यमंत्री ने विधानसभा को

नवीनतम घटनाक्रम से अवगत कराते हुए प्रस्ताव को नामंजूर किये जाने को काला अध्याय करार दिया। उन्होंने केंद्र पर तमिलनाडु की जनता की इच्छा तथा विधानसभा के विधेयक की अवहेलना करने का आरोप लगाया।

मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने कहा, तमिलनाडु सरकार ने विभिन्न मंत्रालयों के माध्यम से सभी आवश्यक स्पष्टीकरण दिए थे, फिर भी केंद्र सरकार ने नीट से छूट के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया।

जयपुर सीरियल ब्लास्ट में जिंदा बम मामले में 4-आतंकी दोषी

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में करीब 17 साल पहले हुए सीरियल बम ब्लास्ट के दौरान चांदपोल के रामचंद्र मंदिर के पास मिले जिंदा बम मामले में अदालत ने चार आतंकियों को दोषी ठहराया है। जयपुर बम ब्लास्ट मामलों की विशेष अदालत में जज रमेश कुमार जोशी जिंदा बम प्लांट करने के मामले में चारों आतंकियों को लेकर फैसला मंगलवार, 8 अप्रैल को सुनाएंगे। अदालत ने जिंदा बम केस में सैफुर्रहमान, मोहम्मद सैफ, मोहम्मद सरवर आजमी और शाहबाज अहमद को दोषी ठहराया है। इनमें शाहबाज को छोड़कर अन्य को सीरियल ब्लास्ट के मामले में फांसी की सजा सुनाई गई थी, लेकिन हाईकोर्ट ने इन्हें बरी कर दिया था। फांसी की सजा के मामले में राज्य सरकार की अपील सुप्रीम

कोर्ट में पेंडिंग है। 13 मई को 2008 को जयपुर में 8 सीरियल ब्लास्ट हुए थे, नौंवा बम चांदपोल बाजार के गेस्ट हाउस के पास मिला था। बम फटने के 15 मिनट पहले इसे डिफ्यूज कर दिया गया था। चारों आतंकियों को इंडियन पेनल कोड की 4 धाराओं, अनलॉफुल एक्टिविटी प्रिवेंशन एक्ट (यूएपीए) की दो, विस्फोटक पदार्थ कानून की 3 धाराओं में दोषी ठहराया गया है। इन धाराओं में अधिकतम आजीवन कारावास का प्रावधान है।

क्या शिखर धवन को मिल गया दूसरा प्यार?

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय बल्लेबाज शिखर धवन अपनी जिंदगी में आगे बढ़ गए हैं और एक बार फिर उन्हें प्यार हो गया है। धवन की लव अफेयर के चर्चा काफी समय से चल रहे हैं। उन्हें आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान एक मिस्ट्री गर्ल के साथ स्पॉट किया गया था उस दौरान से ही उनके अफेयर के चर्चे चल रहे हैं। वहीं इन दोनों को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में ग्रुप मैच में भारत के बांग्लादेश के खिलाफ मैच के साथ देखा गया था। इन दोनों की एक-साथ तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो गई थी, जिसमें महिला को जब करीबी से जानने की कोशिश की गई तो पता चला कि ये सोफी शाइन है जो कि आयरलैंड की हैं। अब धवन ने अपने रिलेशन पर खुलकर बात कही है। दरअसल, धवन ने एक शो में कहा कि हां मैं लाइफ में आगे बढ़ गया हूं। मैं ये नहीं कहूंगा कि मैं प्यार के मामले में बदकिस्मत था। बल्कि, मेरी पसंद कम अनुभव से आई थी। लेकिन अब मेरे पास अनुभव है और वह काम आएगा। ये मेरे लिए सीखने का एक मौका था। मैं हमेशा प्यार में रहता हूं। वहीं जब धवन से पूछा गया कि क्या वह फिर से प्यार करने के लिए तैयार हैं तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि, मैं जानता हूं कि क्रिकेट में बाउंसर से कैसे बचना है और मैं जानता हूं कि अब आप मुझ पर बाउंसर फेंक रहे हैं।

कगिसो रबाडा आईपीएल छोड़ साउथ अफ्रीका लौटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में आरसीबी को हराकर अपनी दूसरी जीत का स्वाद चखने वाली गुजरात टाइटंस को बड़ा झटका लगा है। दरअसल, साउथ अफ्रीका के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा महज 2 मैच खेलकर निजी कारणों से आईपीएल छोड़ स्वेदश लौट गए हैं। उनकी टीम गुजरात टाइटंस ने गुरुवार को ये जानकारी दी। शुभमन गिल के नेतृत्व वाली जीटी ने नहीं बताया है कि रबाडा कब तक लौटेंगे? गुजरात टीम ने एक बयान में कहा कि, कगिसो रबाडा कुछ अहम निजी मसले से निपटने के लिए साउथ अफ्रीका लौट गए हैं। रबाडा ने पंजाब किंग्स और मुंबई इंडियंस के खिलाफ एक एक विकेट लिया ता। उन्हें रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के खिलाफ बुधवार को बेंगलुरू में खेले गए मैच में टीम में जगह नहीं दी गई। रबाडा की जगह अरशद खान को उतारा गया जिन्होंने विराट कोहली का कीमती विकेट झटका। अभी तक रबाडा ने दो ही मैच खेले हैं। उन्होंने पंजाब किंग्स के खिलाफ मुकाबले में 4 ओवर में 41 रन देकर एक विकेट झटका। जबकि मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच में 4 ओवर में 42 रन देकर एक विकेट लिया। इस मैच में रबाडा ने 5 गेंद में सात रन बनाए। फिलहाल, गुजरात टाइटंस की आईपीएल के 18वें सीजन में शुरुआत अच्छी नहीं हुई। टीम को पहले मैच में पंजाब किंग्स के खिलाफ 11 रनों से हार झेलनी पड़ी। इसके अगले मैच में शुभमन गिल की टीम ने पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस को माद दी।

सारा तेंदुलकर ने ग्लोबल ई-क्रिकेट प्रीमियर लीग में खरीदी मुंबई की टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदलुकर की बेटी सारा तेंदुलकर भी अब क्रिकेट में कूद गई हैं। दरअसल, सारा ने ग्लोबल ई- क्रिकेट प्रीमियर लीग में मुंबई फ्रेंचाइजी खरीदी है। जीईपीएल ने गुरुवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करके फैंस को इसके बारे में बताया। ई-क्रिकेट लीग की दुनिया में ग्लोबल ई-क्रिकेट प्रीमियर लीग सबसे बड़ी लीग में से एक है। पहले ही सीजन में ग्लोबल ई-क्रिकेट प्रीमियर लीग ने काफी सुर्खियां बटोरी थी। ग्लोबल ई-क्रिकेट प्रीमियर लीग के पहले सीजन में 2 लाख खिलाड़ियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया था लेकिन 2025 में कुल 910000 खिलाड़ियों के अपना नाम दर्ज करवाया है। जीईपीएल ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर करते हुए बताया कि सारा तेंदुलकर ने ग्लोबल ई क्रिकेट प्रीमियर लीग में मुंबई फ्रेंचाइजी को खरीदा है। मुंबई की मालकिन बनने के बाद सारा तेंदुलकर ने कहा कि, क्रिकेट हमारे परिवार का अभिन्न अंग रहा है। ई-स्पोर्ट्स में इसकी संभावनाओं को तलाशना रोमांचकारी है। जीईपीएलने में मुंबई फ्रेंचाइजी की मालकिन होना एक सपना सच होने जैसा है।

ये 3 खिलाड़ी हासिल कर सकते हैं पीकेएल में 1500 रेड पॉइंट्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रो कबड्डी लीग में अभी तक मात्र दो ही रेडर ऐसे हुए हैं जिन्होंने 1500 रेड पॉइंट्स हासिल करने का कारनामा किया हुआ है। सबसे पहले परदीप नरवाल ने ये कारनामा किया था। परदीप नरवाल पीकेएल में 1800 से भी ज्यादा पॉइंट्स ले चुके हैं। उनके नाम प्रो कबड्डी लीग इतिहास में सबसे ज्यादा रेड पॉइंट्स लेने का रिकॉर्ड है। इसके बाद मनिंदर सिंह का नंबर आता है। उन्होंने 1528 रेड पॉइंट्स अभी तक हासिल किए हैं। अब फैंस के मन में सवाल ये है कि इन दोनों के अलावा और कौन-कौन से ऐसे खिलाड़ी हैं जो इस आंकड़े को हासिल कर सकते हैं। प्रो कबड्डी लीग में युवा रेडर नवीन कुमार बहुत जल्द ही 1500 के आंकड़े को क्रॉस कर सकते हैं। नवीन कुमार ने अभी तक काफी जबरदस्त खेल दिखाया है। उन्होंने 107 मुकाबले अपने पीकेएल करियर में खेले हैं और इस दौरान 1102 रेड पॉइंट्स हासिल कर चुके हैं। इससे पता चलता है कि उनका प्रदर्शन कितना बढ़िया रहा है। नवीन कुमार भी बहुत जल्द 1500 के आंकड़े को हासिल कर सकते हैं।

इस लिस्ट में दूसरे नंबर पर अर्जुन देशवाल हैं जो अपने करियर में अभी तक 1174 रेड पॉइंट्स हासिल कर चुके हैं। अर्जुन देशवाल ने जयपुर पिंक पैंथर्स को पीकेएल का टाइटल जिताने में अहम योगदान दिया था। उनका प्रदर्शन पीकेएल में लगातार अच्छा रहा है। अर्जुन देशवाल जिस हिसाब से खेल रहे हैं, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि वो पीकेएल में जल्द ही 1500 का आंकड़ा हासिल करलेंगे।

पवन सेहरावत प्रो कबड्डी लीग के जबरदस्त रेडर्स में से एक हैं। वो अभी तक 1318 रेड पॉइट्स अपने करियर में हासिल कर चुके हैं। वो ओवरऑल तीसरे सबसे ज्यादा रेड पॉइंट हासिल करने वाले खिलाड़ी हैं। परदीप नरवाल और मनिंदर सिंह के बाद 1500 रेड पॉइंट्स तक पहुंचने वाले वो तीसरे प्लेयर बन सकते हैं। अगले ही सीजन में वो ये कीर्तिमान हासिल कर सकते हैं।

दोनों हाथ से गेंदबाजी करने वाले अनोखे गेंदबाज का आईपीएल डेब्यू

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल इतिहास में अजब गजब टैलेंट आता रहा है। अब आईपीएल के 18वें सीजन में सनराइजर्स हैदराबाद को एक अनोखा प्लेयर मिला है जो दोनों हाथों से गेंदबाजी कर लेता है। अपनी इसी खूबी के कारण वह चर्चा में है। गुरुवार को सनराइजर्स हैदराबाद और केकेआर के बीच मुकाबला खेला जा रहा है। जिसमें कामिंदु मेंडिस ने अपना आईपीएल डेब्यू किया। दरअसल, वो पहले भी दोनों हाथों से बॉलिंग करने के कारण सुर्खियों में बने रहे हैं। अब आईपीएल यूनिवर्स को भी उन्होंने अपना टैलेंट दिखा दिया है। गजब की बात ये है कि उन्होंने एक ही मैच के एक ही ओवर में 2 अलग-अलग तरह से गेंदबाजी की है। श्रीलंका के कामिंदु मेंडिस ने कोलकाता के खिलाफ मैच में दाएं और बाएं हाथ से भी गेंदबाजी की। ये बात है कि कोलकाता की पारी के 12वें ओवर की, जिसमें कामिंदु गेंदबाजी करने आए। कोलकाता के लिए क्रीज पर अंगकृष रघुवंशी और वेंकटेश अय्यर मौजूद थे। जब रघुवंशी खेल रहे थे तब मेंडिस ने बाएं हाथ से गेदंबाजी की वहीं जब अगली ही गेंद पर वेंकटे अय्यर स्ट्राइकिंग एंड पर पहुंचे तो मेंडिस ने ना केवल एंगल बदला बल्कि दाएं हाथ से गेंदबाजी कर सबको चौंका दिया था। बता दें कि, पिछले साल जुलाई में भारत और श्रीलंका के बीच खेली गई टी20 सीरीज में कामिंदू मेंडिस ने गेंदबाजी की थी। उस समय टीम इंडिया के खिलाफ मैच में मेंडिस ने सूर्यकुमार यादव को बाएं हाथ से गेंदबाजी की थी वहीं जब रिंकू सिंह खेल रहे थे तब मेंडिस ने दाएं हाथ से गेंदबाजी करनी शुरू कर दी थी।

जुलाई में इटली में खेली जाएगी होपमैन कप मिश्रित टीम टेनिस प्रतियोगिता

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय टेनिस महासंघ ने घोषणा की है कि इस साल का होपमैन कप इटली के दक्षिणी शहर बारी में खेला जाएगा। इस मिश्रित टीम टूर्नामेंट में इटली, फ्रांस, स्पेन, यूनान, कनाडा और मौजूदा चैंपियन क्रोएशिया की टीमें हिस्सा लेंगी। इसका आयोजन विंबलडन के एक सप्ताह बाद 16 से 20 जुलाई तक किया जाएगा।

होपमैन कप के लिए टीमों में एक पुरुष और एक महिला खिलाड़ी शामिल होते हैं। इसके एक मुकाबले में एक पुरुष एकल मैच, एक महिला एकल मैच और एक मिश्रित युगल मैच शामिल होता है। इस टूर्नामेंट से खिलाड़ियों को रैंकिंग अंक नहीं मिलते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के महान खिलाड़ी हैरी होपमैन के नाम पर, होपमैन कप 1989 में शुरू हुआ और 2020 तक हर साल खेला जाता था। पहले 30 वर्ष तक इसका आयोजन ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शहर में टेनिस सत्र के पहले सप्ताह में किया जाता था। आखिरी बार इसका आयोजन 2023 में फ्रांस में हुआ था जिसमें क्रोएशिया के डोना वेकिच और बोर्ना कोरिच चैंपियन बने थे।

बार्सिलोना और रियाल मैड्रिड में होगा खिताबी मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। बार्सिलोना ने बुधवार को यहां एटलेटिको मैड्रिड को सेमीफाइनल के दूसरे चरण में 1-0 से हराकर कोपा डेल रे फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया जहां उसका सामना अपने चिर प्रतिद्वंद्वी रियाल मैड्रिड से होगा। बार्सिलोना की तरफ से फेरान टोरेस ने पहले हाफ में गोल किया जो आखिर में निर्णायक साबित हुआ। इससे पहले इन दोनों टीमों के बीच फरवरी में खेला गया सेमीफाइनल का पहला चरण 4-4 से बराबर रहा था। इस तरह से बार्सिलोना ने कुल मिलाकर 5-4 से जीत दर्ज करकेफाइनल में जगह बनाई। यह पिछले चार सत्र में पहला अवसर है जबकि बार्सिलोना इस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचा है। रियाल मैड्रिड ने मंगलवार को अतिरिक्त समय तक चले मैच में रियाल सोसिदाद को 5-4 के कुल स्कोर से पराजित करके फाइनल में जगह बनाई थी। इन दोनों टीमों के बीच 2013-14 सत्र के बाद पहली बार फाइनल खेला जाएगा। तबरियाल मैड्रिड ने खिताब जीता था।

विराट कोहली की चोट को लेकर आरसीबी हेड कोच एंडी फ्लावर ने दिया बड़ा अपडेट,

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस ने बुधवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को 8 विकेट से करारी शिकस्त दी। रजत पाटीदार के नेतृत्व वाली आरसीबी की टीम की ये आईपीएल 2025 में पहली हार है। टीम ने अपने शुरुआती दोनों मुकाबले जीते हैं। बेंगलुरु में खेले गए पहले मुकाबले के दौरान रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली को अंगुली में चोट लगी, जिसे देकर एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में मौजूद फैंस टेंशन में आ गए। हालांकि, टीम के हेड कोच एंडी फ्लावर ने कहा है कि चिंता की बात नहीं है। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मुकाबले में फील्डिंग करते समय विराट कोहली को अंगुली में चोट लगी। लेकिन फ्लॉवर ने कहा कि स्टार बल्लेबाज की हालत को लेकर कोई गंभीर चिंता की बात नहीं है। फ्लावर ने मैच के बाद कहा कि, विराट कोहली ठीक लग रहे हैं, वह ठीक हैं, कोई चिंता की बात नहीं है। मैच के बाद फ्लावर ने कहा कि, विराट ठीक लग रहे हैं, वह ठीक हैं, चिंता की कोई बात नहीं है। आरसीबी को ये मैच आठ विकेट से गंवाना पड़ा जो तीन मैचों में सत्र की उनकी पहली हार थी। गुजरात की पारी के दौरान विराट कोहली ने डीप में बाउंड्री बचाने की कोशिश की लेकिन इस दौरान उनकी अंगुली में चोट लगी। फीजियो ने उनका ट्रीटमेंट किया, इस दौरान वह दर्द में दिखे। आरसीबी के मुख्य कोच एंडी फ्लावर ने कहा कि पहले सात ओवरों में चार विकेट खोने से उनकी टीम के लिए परिस्थितियों मुश्किल हो गई थी। फ्लावर ने संवाददाताओं से कहा कि, हमने पावर प्ले में आक्रामक बल्लेबाजी की लेकिन इस बीच हमने कुछ अहम विकेट गंवाए। इससे मैच का पासा पलट गया। अगर आप पावर प्ले में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं तो इससे आपके लिए परिस्थितियों मुश्किल हो जाती हैं।

अयोध्या पहुंचकर मुंबई इंडियंस के खिलाड़ियों ने किए रामलला के दर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल की पांच बार की विजेता टीम मुंबई इंडियंस का अगला मुकाबला शुक्रवार को लखनऊ सुपर जायंट्स से होगा। जिसके लिए टीम लखनऊ पहुंच चुकी है। इसी दौरान टीम के कुछ खिलाड़ी गुरुवार को अयोध्या पहुंचे जहां उन्होंने राम लला के दर्शन किए। खिलाड़ियों ने सोशल मीडिया पर मंदिर के दर्शन करने के बाद की तस्वीरें शेयर की हैं। मुंबई इंडियंस और लखनऊ सुपर जायंट्स के बीच आईपीएल में ये चौथा मुकाबला खेला जाएगा। इस मुकाबले के लिए टीम बुधवार को लखनऊ पहुंच गई थी। तिलक वर्मा, सूर्यकुमार यादव, दीपक चाहर और कर्ण शर्मा जैसे मुंबई इंडियंस के खिलाड़ियों ने शुक्रवार को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ आईपीएल 2025 के मुकाबले से पहले अयोध्या राम मंदिर का दौरा किया। उनके साथ सूर्यकुमार की पत्नी देविश शेट्टी और चाहर की पत्नी जया भी थीं। मुंबई इंडियंस फ्रेंचाइजी ने एक्स पर खिलाड़ियों और उनके परिवार की तस्वीरें शेयर की है।

सूर्यकुमार यादव ने इंस्टाग्राम पर अपनी पत्नी के साथ की तस्वीर शेयर की। इस दौरान उन्होंने कैप्शन में लिखा कि, जय भगवान राम। भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार ने आईपीएल 2025 के तीसरे मैच में मुंबई इडियंस के लिए कप्तानी की थी। इस दौरान टीम को चेन्नई के खिलाफ हार झेलनी पड़ी।

परिजन का आरोप पुलिस की पिटाई के बाद बाहर नहीं निकले

मऊगंज में घर के अंदर फांसी पर लटके मिले पिता सहित दो बच्चों के शव, पुलिस पर शक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले के गडरा गांव के एक घर में तीन शव मिले हैं। बदबू आने पर पड़ोसियों ने पुलिस को सूचना दी थी। पुलिस गेट खोलकर अंदर गई तो तीन शव फंदे से झूल रहे थे। उनकी पहचान औसेरी साकेत, उसकी बेटी मीनाक्षी (11) और बेटे अमन (8) के रूप में हुई है। औसेरी के भाई की पत्नी का कहना है कि पिछले दिनों हिंसा के बाद गांव में सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस ने जेठ से मारपीट की थी। उसी दिन से उन्होंने घर का गेट नहीं खोला। वो अपने से फांसी नहीं लगाए हैं। इसके लिए पुलिस जिम्मेदार है। बता दें, ये वही गडरा गांव है, जहां 15 मार्च को पीट-पीटकर एक युवक की हत्या के बाद हिंसा में एएसआई की मौत हो गई थी।

रीवा आईजी गौरव राजपूत ने बताया, औसेरी साकेत के घर से बदबू आ रही थी। घर के अंदर औसेरी, बेटी मीनाक्षी (11) और बेटे अमन (8) के शव मिले हैं। पारिवारिक कारणों के चलते सामूहिक सुसाइड का मामला लग रहा है। 15 मार्च को हुई हिंसा से यह मामला पूरी तरह से अलग है।

वहीं पड़ोसियों ने बताया, आज सुबह से घर से बदबू आ रही थी। खिड़की से झांककर देखा तो दरवाजा अंदर से बंद था। इसके बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने रीवा से फॉरेंसिक टीम और अतिरिक्त पुलिस बल को बुलाया है।

पहली पत्नी की मौत, दूसरी छोड़कर गई: जानकारी के अनुसार, औसेरी की पहली पत्नी की मौत हो चुकी है। उसके चार बच्चे बाहर रहते हैं। दूसरी पत्नी से दो बच्चे थे। वह भी छोड़कर चली गई। औसेरी दो बच्चो के साथ रह रहा था। सिलाई का काम करके वह परिवार का भरण पोषण करता था।

परिजन बोले- घर में घुसकर मारती थी पुलिस

कुसुमकली ने बताया, जेठ और उनके बच्चों के शव मिले हैं। हम दो किलोमीटर दूर रहते हैं। यहां गांव में 15 मार्च को विवाद हुआ था, इसके बाद से कोई घर से बाहर नहीं निकल रहा था। गांव में जो पुलिस तैनात थी वो लोगों को घर में घुसकर मारती थी। महिलाओं को भी पीटा जाता था। पुलिस ने जेठ से भी मारपीट की थी।

एसपी दिलीप सोनी बोले- पुलिस का कोई लेना-देना नहीं है

एसपी दिलीप सोनी ने बताया, गडरा में साकेत समाज की बस्ती से घर से बदबू आने की सूचना मिली थी। पुलिस पहुंची तो घर अंदर से बंद था। आसपास के लोगों की मदद से पुलिस ने दरवाजा खोला। अंदर तीन डेडबॉडी थी। शवों का आइडेंटिफिकेशन करा रहे हैं। पोस्टमॉर्टम के लिए बॉडी भेजी हैं। एफएसएल टीम से जांच कराई गई है। घटना का कारण पता कर रहे हैं। पुलिस का इस घटना से कोई लेना-देना नहीं है।

'सुरक्षा करने वाली पुलिस ने फांसी पर लटका दिया'

मृतक औसेरी के परिजन रामकली साकेत ने कहा, पुलिस कहती थी कि किसी के घर मत जाना। किसी को अपने पास मत बैठाना, हम तुम्हारी सुरक्षा करेंगे। हिंसा के बाद पुलिस ने घर में घुसकर लोगों को पीटा है। छोटे-छोटे बच्चों को उठाकर खेत में फेंक दे रहे थे। रात में पुलिसवाले घर में घुसकर महिलाओं को मार रहे थे। कुंडी लगाकर पीटा है।

मॉस्किटो लिक्विड पीकर एसपी आफिस पहुंची रेप पीड़िता

इंस्टाग्राम पर दोस्ती कर महिला से किया रेप, अश्लील वीडियो बनाकर लाखों रुपए वसूले

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में एक युवक ने इंस्टाग्राम पर दो बच्चों की मां से दोस्ती की। शादी का झांसा देकर उससे शारीरिक संबंध बनाए और अश्लील वीडियो बना लिए। पीड़िता ने आरोप लगाया कि इसके बाद आरोपी शादी की बात से मुकर गया, वहीं वीडियो वायरल करने की धमकी देकर लाखों रुपए वसूल लिए। परेशान होकर वह शुक्रवार को मॉस्किटो लिक्विड पीकर एसपी कार्यालय पहुंची।पुलिस ने तुरंत उसे जिला अस्पताल में भर्ती करवाया है।

पीड़िता ने बताया कि आरोपी आदित्य मिश्रा (24) ने उससे अप्रैल 2024 में पहली बार मुलाकात की। उसने सतना के बेला रिसॉर्ट में कमरा बुक किया और उसके साथ दुष्कर्म किया। मई 2024 में आरोपी उसे को जबलपुर ले गया। वहां दीनदयाल बस स्टैंड के पास एक होटल में ठहरकर फिर से शारीरिक संबंध बनाए और चुपके से अश्लील वीडियो बना लिए। आरोपी ने इन वीडियो को वायरल करने की धमकी देकर पीड़िता से लाखों रुपए वसूल लिए। परेशान होकर पीड़िता ने मॉस्किटो लिक्विड पी लिया और एसपी कार्यालय पहुंची। महिला थाना पुलिस ने तुरंत उसे जिला अस्पताल में भर्ती करवाया।

पीड़िता ने अपने आवेदन में बताया कि 2015 में उसकी हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार शादी हुई थी। उसके दो बच्चे हैं, एक बच्चे की उम्र 9 साल और दूसरे की 4 वर्ष है। जब पति को इस बारे में पता चला तो उसने उसके साथ मर्जी से रिश्ता समाप्त करने का आवेदन कोर्ट में दिया। मामले की सुनवाई चल रही है। उधर आरोपी अब इस बात की धमकी दे रहा है कि अब वह तलाक के बाद भी शादी नहीं करेगा।

पीड़िता का आरोप है कि आरोपी ने वीडियो के जरिए उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया और विवाह विच्छेद करने का दबाव बनाया। इसी दौरान, ब्लैकमेलिंग के कारण महिला ने आरोपी को 3 लाख रुपए भी भेज चुकी है। इसके बाद से आरोपी सतना से पुणे भाग गया और वहां गोपनीय रूप से रह रहा है। वह वीडियो वायरल करने की धमकी देकर मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

टीआई श्वेता मौर्य ने बताया कि पीड़िता के परिजनों को सूचित कर दिया गया है। पीड़िता की हालत सामान्य होने के बाद मामले की जांच कर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। आरोपी गड़िया टोला का रहने वाला है और वर्तमान में फरार है। वह फोन पर पीड़िता को लगातार धमकियां दे रहा है।

मऊगंज मनरेगा प्रभारी एपीओ को कलेक्टर ने हटाया

नईगढ़ी जनपद में किया अटैच, वीडियो में रिश्वत लेते दिखी थी नीतू सिंह

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जनपद पंचायत में मनरेगा प्रभारी एपीओ नीतू सिंह का पैसे लेने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद कलेक्टर संजय जैन ने कड़ी कार्रवाई की है। कलेक्टर ने तत्काल प्रभाव से नीतू सिंह को मऊगंज से हटाकर नईगढ़ी जनपद पंचायत में अटैच कर दिया है। मामला 2 अप्रैल का है, जब नीतू सिंह का पैसों के लेन-देन का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इस मामले में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को 24 घंटे के भीतर जांच समिति गठित कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिए गए थे। रिपोर्ट अभी तक नहीं मिली है।

नीतू सिंह, एपीओ

ग्राम देवरी के लाभार्थी मंगल सिंह और त्रियुगीनारायण मिश्रा ने शिकायत की है कि नंदन फल योजना के तहत पौधा रोपण में लाभ दिलाने के लिए नीतू सिंह ने उनसे 4,000 रुपए की रिश्वत मांगी थी। कलेक्टर के आदेश के मुताबिक, जांच रिपोर्ट आने तक नीतू सिंह को नईगढ़ी जनपद पंचायत में किसी भी शाखा का दायित्व नहीं दिया जाएगा। नवनियुक्त कलेक्टर संजय जैन की इस कार्रवाई से जनता में भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की उम्मीदें जगी हैं।

अभिनेता मनोज कुमार के निधन पर उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने व्यक्त किया शोक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारत के सिनेमा जगत को राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत करने वाले महान अभिनेता, निर्माता-निर्देशक मनोज कुमार के निधन पर उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने गहन शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि भारत की बात सुनाने वाली आवाज आज खामोश हो गई। उन्होंने कहा कि मनोज कुमार जी का निधन भारतीय सिनेमा जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपने फिल्मों के माध्यम से देशभक्ति, संस्कृति और जनचेतना को नई ऊँचाइयाँ दीं। 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति' जैसी कालजयी फिल्मों से उन्होंने हर भारतीय के हृदय में देश के प्रति गर्व और सम्मान का भाव जगाया। वे वास्तव में 'भारत कुमार' थे।

मानसभवन में जिला प्रशासन की तरफ से पुस्तक मेले का आयोजन

पुस्तक मेले में असंतुष्ट दिखे अभिभावक

एक ही स्थान में सभी विद्यालयों की पुस्तकें एवं गणवेश रियायती दर पर उपलब्ध कराने का खोखला दावा

पुस्तक एवं गणवेश मेला का कलेक्टर ने किया शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के मानसभवन में जिला प्रशासन की तरफ से पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। जिसमें शहर में निजी संचालित स्कूलों की किताबों को डिस्काउंट में देने का दावा किया गया। इस पुस्तक मेले में कई किताब-कॉपी बेचने वाली दुकानों के स्टाल लगे, काफी संख्या में लोग किताब-कॉपियां लेने के लिए पहुंचे लेकिन ज्यादातर अभिवावक इस आयोजन से संतुष्ट नहीं रहे, क्योंकि उन्हें जिन स्कूलों की किताबें चाहिए थी वो मिल ही नहीं पाईं। इसके लिए उन्हें दुकान जाने के लिए ही कहा गया। पुस्तक मेले में लोगों ने सिर्फ 10 फीसदी डिस्काउंट के साथ कॉपियां ही खरीदी। हालांकि कुछ ही स्टाल में अभिवावकों को उनके बच्चों के स्कूल के सिलेबस के अनुसार किताबें मिलीं। दावा यह किया गया था कि हर स्टाल में हर स्कूल की किताब मिलेगी लेकिन आलम यही रहा कि जिनसे स्कूलों की सांठ-गांठ है उनकी ही स्टॉल में उन स्कूलों की किताबें मिल रही थीं वो भी पूरी नहीं।लोगों ने कहा इससे अच्छा तो दुकान से जाकर ही किताबें ले लेते इतना डिस्काउंट तो दुकानों में भी मिल जाता है। इस पुस्तक मेले का मुआयना करने के लिए रीवा कलेक्टर प्रतिभा पाल भी पहुंची, उन्होंने क्या मुआयना किया समझ से परे है। जब उनसे जबलपुर कलेक्टर के आदेश के तर्ज पर एनसीआरटी की किताबों को सभी स्कूलों में लागू करने से जुड़ा सवाल किया तो उन्होंने कोई खास जवाब नहीं दिया। कुलमिलाकर इस पुस्तक मेले को उसी स्कैम का हिस्सा माना गया जैसा की स्कूल और किताब बेचने वाली दुकानों के जरिये होता है।

बतादें कि दो दिवसीय पुस्तक एवं गणवेश मेला का कलेक्टर प्रतिभा पाल ने फीता काटकर शुभारंभ किया। दवा किया गया है कि मानस भवन में आयोजित मेले में विभिन्न विद्यालयों की पुस्तकें एवं गणवेश रियायती दर पर उपलब्ध रहेंगे।

पुस्तक मेले के शुभारंभ के उपरांत कलेक्टर ने पुस्तक व ड्रेस विक्रेताओं से चर्चा की तथा निर्देश दिये कि निर्देशानुसार विद्यालयों की सभी पुस्तकें उपलब्ध करायें जिससे अभिभावक को पुनः किताब खरीदने न आना पड़े। इस दौरान उन्होंने अभिभावकों व विद्यार्थियों से भी संवाद किया। विद्यार्थियों एवं उनके परिजनों ने कलेक्टर को इस पहल के लिये धन्यवाद दिया, लेकिन जब वह पुस्तक मेले में किताबें सहित अन्य सामग्री लेने पहुंचे तो उन्हें मायूसी हाथ लगी। हालांकि पुस्तक मेला के भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने विक्रेताओं के स्टाल का निरीक्षण किया तथा निर्धारित मापदण्ड के अनुसार पुस्तक व ड्रेस विक्रय किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि प्रत्येक स्टाल में विभागीय एक व्यक्ति की परिचय पत्र के साथ डयूटी लगायें। लेकिन यह सब महज औपचारिक ही नजर आया।

भटकते रहे अभिभावक

प्रशासन ने भले ही पुस्तक मेला लगाकर अभिभावकों को सुविधा देने का दावा कर रहा है, लेकिन हकीकत है कि अभिभावक दिनभर परेशान नजर आये। वो पुस्तक मेला और संबंधित दुकानों के चक्कर लगाते हुये नजर आये। क्यों कि कीमतों में रियायत की बात तो दूर उन्हें किताबें ही नहीं उपलब्ध हो पा रही थीं। पुस्तक मेले में स्टॉक खत्म होने की बात ही जा रही थी और दुकानों में भेजा जाता था। और दुकानों में पहुंचने पर बोला जा रहा था कि स्टॉक समाप्त हो गया, दो-तीन दिन बात उपलब्ध हो पायेंगी। इस तरह अभिभावक दिनभर बच्चों के साथ भटकते रहे। संबंधित पुस्ताकों की दुकानों पर देर शाम तक अभिभावकों की भीड़ जामा रही।

सीईओ के खिलाफ जनपद सदस्यों का बैठक में हंगामा

महिला सदस्यों से अभद्रता के आरोप, निंदा प्रस्ताव पारित कर कलेक्ट्रेट पहुंचे प्रतिनिधि

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। अमरपाटन जनपद पंचायत की सामान्य सभा की बैठक में शुक्रवार को जमकर हंगामा हो गया। दरअसल बैठक में अध्यक्ष ममता पांडेय और सदस्यों ने सीईओ ओपी अस्थाना पर देरी से आने का आरोप लगाते हुए नारेबाजी कर दी। जिससे नाराज होकर सीईओ बैठक छोड़कर बाहर चले गए। बैठक में सीईओ के जवाब से नाराज होकर सभी जनपद सदस्यों ने उनके खिलाफ मुर्दाबाद के नारे लगाए। सदस्यों का आरोप है कि सीईओ महिला सदस्यों और अध्यक्ष के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं। इसके बाद सदस्यों ने सीईओ के खिलाफ निंदा प्रस्ताव पारित किया। नाराज सदस्य शिकायत के लिए मैहर स्थित कलेक्ट्रेट पहुंचे।

अध्यक्ष माया पांडेय के अनुसार सीईओ ओपी अस्थाना बैठक में देरी से पहुंचे, जिसपर सदस्यों ने उनसे देरी से आने का कारण पूछा तो वे भड़क गए और बैठक छोड़कर बाहर चले गए।

वहीं सीईओ अस्थाना का कहना है कि बैठक में जनपद सदस्यों की जगह उनके पति मौजूद थे, जो नियम के खिलाफ है। मैंने उन्हें बैठक से बाहर जाने के लिए कहा जिस पर वे नाराज हो गए और मेरे साथ अभद्र व्यवहार करने लगे। जिसके कारण मुझे बैठक छोड़नी पड़ी।

कलेक्टर ने जिले में 10 करोड़ रूपये से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की समीक्षा की

गुणवत्ता के साथ समय सीमा में कार्य पूर्ण करने के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने जिले में 10 करोड़ रूपये से अधिक लागत के निर्माण कार्यों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा के दौरान विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि पूरी गुणवत्ता के साथ समय सीमा में कार्यों को पूर्ण करायें।

कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने सिंचाई विभाग की नहरों के कार्य प्राथमिकता से पूर्ण कराने तथा भवन निर्माण कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि टीआरएस कालेज में निर्माणाधीन भवनों की प्रगति धीमी है शीघ्रता से कार्य हो तथा स्वास्थ्य विभाग के केन्द्रों एवं छात्रावास भवनों के निर्माण कार्यों को संबंधित विभाग गति दें।

जिले में 10 करोड़ रूपये से अधिक की लागत से विभिन्न विभागों के 57 कार्य स्वीकृत है। कलेक्टर ने विभागवार एवं कार्यवार समीक्षा करते हुए चिकित्सा शिक्षा विभाग अन्तर्गत मेडिकल कैंपस में निर्माणाधीन डॉक्टर्स क्वार्टर्स के कार्य में धीमी प्रगति पर निर्माण एजेंसी के विरूद्ध कार्यवाही किये जाने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये। उन्होंने गुढ़ औद्योगिक क्षेत्र में जून से पूर्व पाइप लाइन द्वारा जल की उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया। विद्युत मंडल के आरडीएस योजना के तहत कार्यों तथा हाउसिंग बोर्ड द्वारा पुर्नघन्त्वीकरण योजना से कराये जा रहे कार्यों की कलेक्टर ने बैठक में समीक्षा की। उन्होंने मेडिकल कालेज में निर्माणाधीन अकादमिक भवन को मेडिकल कालेज को शीघ्र हस्तांतरित करने के निर्देश पीआईयू को दिये। उन्होंने बैठक में अनुपस्थित विभागीय अधिकारियों को नोटिस जारी किये जाने हेतु निर्देशित किया। इस दौरान सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, डीन मेडिकल कालेज डॉ. सुनील अग्रवाल एवं अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा आरपी सिंह तथा विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

टायर फटा, महुए के पेड़ में जा घुसी कार, 6 लोग घायल

घायलों में महिला-पुरुष और बच्चे शामिल, चित्रकूट दर्शन करने जा रहे थे

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में स्टेट हाईवे सतना-चित्रकूट मार्ग पर कार महुआ के पेड़ से टकरा गई। हादसे में 6 लोग घायल हुए हैं। इनमें बच्चे, पुरुष और महिला शामिल हैं। परिवार के लोग चित्रकूट दर्शन के लिए जा रहे थे। रास्ते में टायर फटने से चार पहिया वाहन अनियंत्रित होने से हादसा हुआ। घटना शुक्रवार शाम मझगवा थाना क्षेत्र के कड़ियन मोड़ के पास हुई। हादसे में 2 बच्चे, 2 महिलाएं और 2 पुरुष शामिल हैं। घटना की सूचना मिलते ही मझगवा थाना प्रभारी निरीक्षक आदित्य नारायण धुर्वे अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। 108 एम्बुलेंस की मदद से सभी घायलों को मझगवां प्रथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। दुर्घटनाग्रस्त कार में सवार परिवार रामनगर थाना क्षेत्र के मिगरौती गांव से चित्रकूट दर्शन के लिए निकला था।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।